JAIN VISHVA BHARATI

an institute dedicated to human values

Ladnun Office : Post Box No. 8, Post - Ladnun - 341 306, Dist. Nagaur, Rajasthan (India)
Phone : + 91-1581-222025/080, Fax : +91-1581-223280
Email : jainvishvabharati@yahoo.com, website : www.jvbharati.org

Kolkata Office : Mahasabha Bhawan, 3, Portuguese Church Street, Kolkata - 700 001
Phone : +91-33-2235 9800, Fax : +91-33-2235 9799
Email : secretariatkol@jvbharati.org

वर्ष 1 | अंक 4 | अक्टूबर-दिसम्बर, 2011

जैन विश्व भारती की गृह पत्रिका

कामधेनु

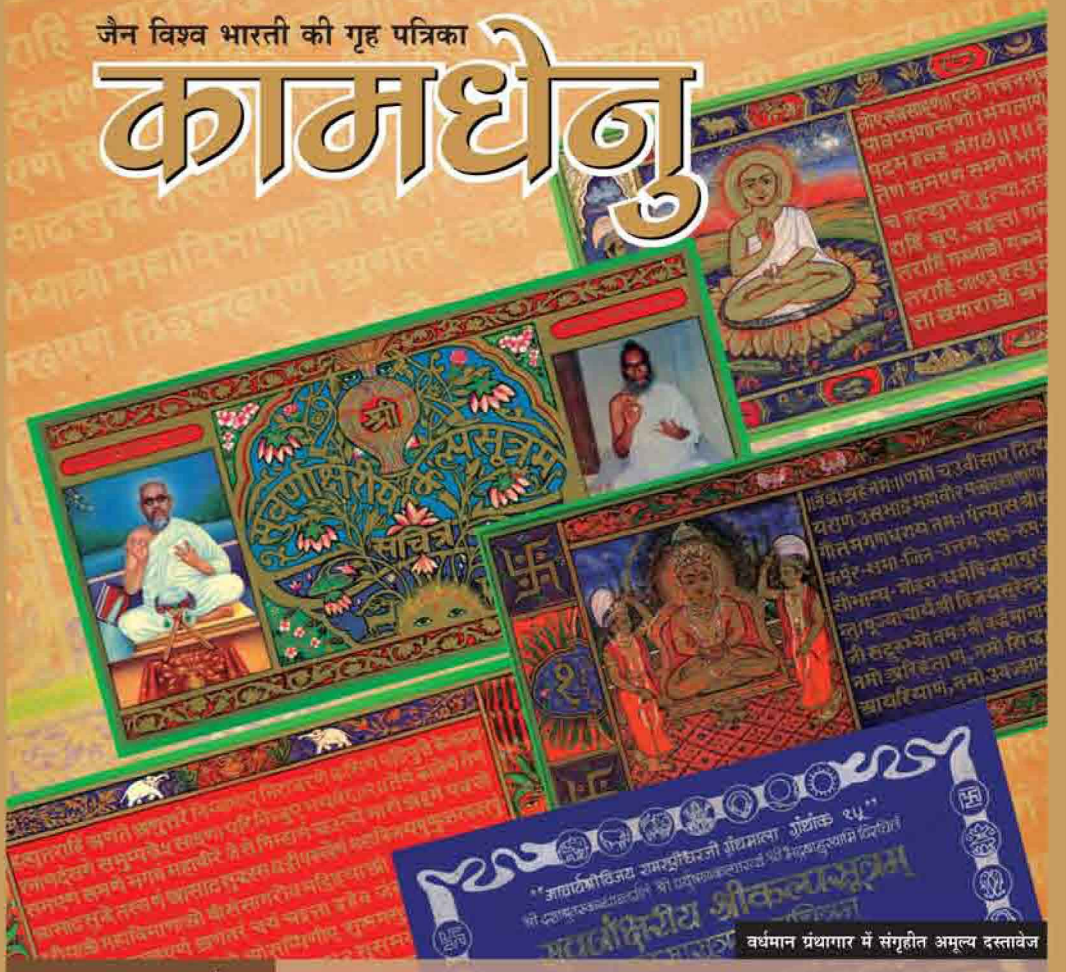

वर्धमान ग्रंथागार में संगृहीत अमूल्य दस्तावेज

आवरण आलेख धर्म तीर्थ का प्रवर्तन | 20

अन्तर्पृष्ठीय

वर्धमान ग्रंथागार | 07

समण संस्कृति संकाय का 14वां दीक्षांत समारोह | 10

आचार्य महाप्रज्ञ की पुस्तक का लोकार्पण | 14

ह्यूस्टन में प्रेक्षा सेन्टर का वार्षिकोत्सव | 18

शुद्धता का भतीक जैन विश्व ारती

जैन विश्व भारती के सात्विक, शुद्ध और स्वस्थ प्राकृतिक परिवेश की प्रशंसा करते हुए आचार्य तुलसी ने कहा कि 'दवा, हवा और दुआ यहाँ की अपनी विशेषताएँ हैं। सेवाभावी कल्याण केन्द्र की शुद्ध दवा, प्रकृति की शुद्ध हवा और धर्म की शुद्ध आराधना सहज ही लोगों के लिए लाभदायक बन जाती है। जीवन की व्यस्तता से जुड़े लोग यहाँ आकर राहत और कृतार्थता का अनुभव करते हैं। आज पूरे समाज का ध्यान जैन विश्व भारती की ओर आकृष्ट है।

आचार्य तुलसी

जैन विद्या का विश्व प्रसिद्ध केन्द्र : जैन विश्व भारती

जैन विश्व भारती और जैन विश्व भारती संस्थान जैन विद्या के विश्व प्रसिद्ध केन्द्र हैं। विद्या के इस तीर्थ का मूल्यांकन होना चाहिए। भारत के छह प्राचीन धर्मों में एक जैन धर्म है। इसके पास ज्ञान की विशाल राशि है। ब्राह्मण परंपरा में अपनी विद्या के प्रति आज भी जागरूकता है। लेकिन जैनों का अपनी विद्या के प्रति कुछ उपेक्षाभाव रहा है। जैन विश्व भारती को अपनी इस भूल का सुधार करना है। इस संस्थान में ऐसे कार्यकर्ता तैयार हों, जो धूनी रमाकर कार्य करें। पद और व्यवस्था से ऊपर रहकर जैन विद्या को विश्व के समक्ष प्रस्तुत करें तो मानवता की बहुत बड़ी सेवा होगी।

आचार्य महाप्रज्ञ

आशीर्वचन

अर्हम्

जैन विश्व भारती को गुरुदेव तुलसी ने 'कामधेनु' कहा था। यहां कामधेनु की एक प्रतिमा भी है, किन्तु वह तो मात्र प्रतीक है। वास्तव में जैन विश्व भारती ही 'कामधेनु' है। कामधेनु को उचित रूप में भरण-पोषण भी मिलना चाहिए और फिर उसे कोई दुहने वाला भी चाहिए। यह एक ऐसी कामधेनु है जिसके पास शिक्षा और साधना की संपत्ति है। जैन विश्व भारती के और भी अनेकानेक उपक्रम हैं। यह तेरापंथ समाज की बहुत ही महत्त्वपूर्ण संस्था है जो गुरुदेव तुलसी के प्रताप और उनकी कृपा से समाज के हाथ में आई।

आचार्य महाश्रमण

संजीवन बोल

जैन विश्व भारती एक ऐसी संस्था है, जिसमें शिक्षा, साधना, सेवा, शोध आदि अनेक प्रकार की प्रवृत्तियाँ चलती रहती हैं। हर प्रवृत्ति का अपना महत्त्व है। विश्वविद्यालय होने के कारण यहाँ शिक्षा और शोध के संदर्भ में बहुआयामी प्रवृत्तियों का संचालन होता है।

विज्ञान के क्षेत्र में हर नई खोज का विशेष मूल्य है। इसी प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में शोध का अपना वैशिष्ट्य है। प्राच्य विद्याओं के संबंध में शोध का पूरा अवकाश है। शोध के दो रूप हैं- संकलन और नई स्थापना। संकलनात्मक शोध का काम सरल है, पर नई स्थापना के लिए ज्ञान की गंभीरता के साथ मौलिक चिंतन का योग अपेक्षित है। जैन आगमों में शोध की पर्याप्त संभावना है। उस संभावना को ध्यान में रखकर शोधार्थी विद्वान सलक्ष्य काम करें तो कुछ नए क्षितिज उद्घाटित हो सकते हैं।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

जैन विश्व भारती की मुख पत्रिका

कामधेनु

वर्ष 1 | अंक 4 | अक्टूबर-दिसम्बर, 2011

परामर्श
डॉ. अवधेश प्रसाद सिंह

प्रकाशक
जितेन्द्र माहटा, मंत्री
जैन विश्व भारती

संपादक
डॉ. कल्पना कुण्डलिया

संपादन-सहयोग
राजेन्द्र खटेड़

जैन विश्व भारती
पोस्ट बॉक्स नं. 8,
पोस्ट - लाडनूं - 341 306
जिला - नागौर, राजस्थान (भारत)
दूरभाष : +91-1581-222025 / 080
फैक्स : +91-1581-223280
ई-मेल : jainvishwabharati@yahoo.com
वेबसाइट : www.jvbharati.org

मुद्रक
अमृतधारा अवनत
7/1 बी, ग्रान्ट लेन,
कोलकाता - 700 012

अनुक्रम

आशीर्वचन	आचार्य महाश्रमण	1
संजीवन बोल	साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा	2
उपोद्घात	'मंत्री मुनि' मुनि सुमेरमल 'लाडनूं'	4
अध्यक्षीय	सुरेन्द्र चोरड़िया	5
संपादकीय	डॉ. कल्पना कुण्डलिया	6
आधार-स्तंभ	वर्धमान ग्रंथागार	7
दस्तावेज	अतीत के वातायन से : मुनि मोहनलाल कुमारजी	9

प्रगति पदचिह्न
- 14वां दीक्षांत समारोह — 10
- राष्ट्रीय आंचलिक संयोजक कार्यशाला — 11
- महाप्रेक्षाध्यान बरसाती आत्म मनीषा सम्मान समारोह — 11
- सेवा बालोद्यान में बाल शिविर का आयोजन — 11
- जीवन विज्ञान दिवस का वृहद् आयोजन — 12
- संघ सेवा पुरस्कार समारोह — 13
- आचार्य महाप्रज्ञ अहिंसा प्रशिक्षण सम्मान — 13
- केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री श्री कपिल सिब्बल द्वारा आचार्य महाप्रज्ञ की नवीन कृति 'ट्रांसफोर्म योर सेल्फ' का लोकार्पण — 14
- दैनिक भास्कर के तत्वावधान में प्रेक्षाध्यान शिविर आयोजित — 15
- जैन विश्व भारती में प्रेक्षाध्यान शिविरों का आयोजन — 15
- प्रेक्षावाहिनी का प्रथम अधिवेशन — 15
- आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की छात्राओं ने लिया आई-सीड में सॉफ्ट स्किल का प्रशिक्षण — 16
- गुवाहाटी में 'समाज की कामधेनु : जैन विश्व भारती' विषयक कार्यक्रम एवं संयोजिका समिति की बैठक का आयोजन — 16
- उड़ान - 2011 — 17

विश्व पटल पर जैन विश्व भारती
विदेश स्थित केन्द्रों की विविध गतिविधियां — 18

साहित्य
- धर्म जीने का प्रयोग / आचार्य महाप्रज्ञ — 20
- जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित पुस्तकें — 22

शोध
- कामधेनु का है वरदान : आगम वाणी अनुसंधान / डॉ. मुनि महेन्द्रकुमार — 23

अहिंसा को अभियान
- श्री सुरेन्द्र चोरड़िया जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के कुलाधिपति मनोनीत — 25

प्रवर्धित परिवार : जैन विश्व भारती के नए सदस्य — 25

शिलापट्ट पर अंकित शिलालेख
- चेतना को झंकृत करने वाली संस्था : जैन विश्व भारती / साध्वी चारित्रप्रज्ञा — 26
- प्रज्ञा जागरण का संस्थान : जैन विश्व भारती / तारादेवी रामपुरिया — 27
- जैन विश्व भारती का प्रयोजन और प्रासंगिकता / डॉ. रामजी सिंह — 28

संबोधि : दान के बोर — 30

नींव के पत्थर
- जैन शिक्षा मनीषी श्रीचंदजी रामपुरिया : पुरुषार्थ के जीवंत प्रतीक — 31

दिशा पथ
- सम्मान मुद्दे या नौकरी को नहीं, ईमानदारी को दीए / धर्मचंद चोपड़ा — 32

कूटी कर्मी : संस्थान के समर्पित कर्मी : विमल सिंह राजपूत — 33

संस्मरण
- मेरी आकाशवाणी : जैन विश्व भारती / सरोज सेठिया — 33

बाल मंच — 34
- बातों से जानें / प्रतीक जैन • कम्प्यूटर माँ / वैशाली जैन
- Aims Of Education / *Simran Pundiya*

पाठकीय प्रतिक्रिया — 35

उपोद्घात

जैन विश्व भारती का प्रारंभ आचार्य श्री तुलसी के विशेष स्वप्न के रूप में हुआ। गुरुदेवश्री चाहते थे कि धर्मसंघ में एक संस्थान बहुआयामी प्रगति का प्रतीक बने। देश-विदेश के लोग जिससे प्रेरणा पा सकें तथा भारतीय दर्शन एवं प्राच्य विद्या का अध्ययन कर सकें। जैन विद्या पठन-पाठन में तो यह तक्षशिला के अनुरूप बने, ऐसा गुरुदेव का चिंतन था।

पहले यहाँ स्वास्थ्य निकेतन नाम से एक मकान लाडनूं युवक परिषद द्वारा बनाया गया था, जो बाद में 'भिक्षु विहार' नाम से प्रतिष्ठित हुआ। प्रारंभ में विपश्यना-प्रेक्षाध्यान शिविरों के आयोजन कई बार हुए। उनसे जैन विश्व भारती का कण-कण मानो अध्यात्म प्रधान बन गया। क्रमशः इसका विस्तार हुआ।

आज यह संस्थान अपनी तरुणाई में है। बाहर विदेशों में तेरापंथ की पहचान जैन विश्व भारती के साथ जुड़ गई है। यह संस्थान के लिए गौरव की बात है। जैन विश्व भारती का विस्तार आज विमल विद्या विहार, जैन विश्व भारती मान्य विश्वविद्यालय, वर्धमान ग्रंथागार, तुलसी अध्यात्म नीडम् आदि के रूप में हो चुका है।

भारत के अनेक विश्वविद्यालयों के कुलपति, उप कुलपति तथा विदेशों के समागत विद्वानों ने यहाँ पधार कर और इसके बहुआयामी क्रियाकलापों को देखकर इसकी सराहना की है। यह संस्थान के उज्ज्वल भविष्य का संकेत है।

अब इसके बहुआयामी स्वरूप को बनाए रखने और उसे विस्तारित करने की अपेक्षा है।

'मंत्री मुनि' मुनि सुमेरमल 'लाडनूं'

अध्यक्षीय

परम श्रद्धेय आचार्य तुलसी ने जैन विश्व भारती की स्थापना के समय इसे जैन धर्म, दर्शन एवं अध्यात्म के एक उच्च स्तरीय अध्ययन एवं शोध संस्थान के रूप में परिकल्पित किया था। उसी के फलस्वरूप जैन विश्व भारती के मूलभूत उद्देश्यों एवं मुख्य गतिविधियों में 'शोध' का स्थान सर्वोपरि है।

'शोध' की इस गतिविधि के अंतर्गत जैन आगमों के संपादन और प्रकाशन का महत्वपूर्ण कार्य हो रहा है। आचार्य तुलसी ने जैन आगमों के संपादन की कल्पना की, जिसे आचार्य महाप्रज्ञ ने साकार किया। आचार्य महाप्रज्ञ स्वयं गुरुदेव तुलसी के वाचना प्रमुखत्व में संबद्ध हुए एवं अनेक साधु-साध्वियों तथा समणियों को इस कालजयी कार्य से जोड़ा और आगम संपादन का कार्य बहुमान्य हुआ। वर्तमान में इस परंपरा का सम्यक निर्वाह आचार्य श्री महाश्रमणजी के द्वारा किया जा रहा है एवं संपूर्ण आगम संपादन का कार्य आपश्री के वाचना प्रमुखत्व में गतिमान है। मूलतः आगम संपादन का कार्य आचार्यों के निर्देशन में विद्वान साधु-साध्वियों एवं समणियों द्वारा संपादित होता है लेकिन इनके प्रबंधन एवं प्रकाशन का सारा दायित्व जैन विश्व भारती द्वारा निर्वहन किया जाता है। परिणामस्वरूप जैन विश्व भारती के प्रकाशन में अनेक आगम ग्रंथ, कोश साहित्य, आगम भाष्य आदि जनता के सम्मुख आ रहे हैं। इन आगम ग्रंथों में आयारो, भगवतीसूत्र, दसवेआलियं, सूत्रकृतांग, उत्तराध्ययन, आचारांग, ठाणं आदि प्रमुख हैं। जैन विश्व भारती की उपलब्धियों का मूल्यांकन किया जाए तो आगम संपादन के कार्य को प्रथम स्थान पर अंकित किया जा सकता है। इस महत्वपूर्ण कार्य का मूल्यांकन न केवल तेरापंथ अपितु समग्र जैन समाज कर रहा है।

जैन विश्व भारती परिवार आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ एवं आचार्य महाश्रमण के इस महत्वपूर्ण अवदान के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हुआ श्रद्धानत है।

मैं कामना करता हूँ कि आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी के अवसर पर जैन विश्व भारती में शोध का कार्य गुणात्मक और संख्यात्मक दोनों दृष्टियों से बढ़े तथा जैन विश्व भारती जैन दर्शन, जैन विद्या के क्षेत्र में आचार्य तुलसी के स्वप्न के अनुरूप एक उच्च स्तरीय शोध संस्थान के रूप में विश्वप्रतिष्ठित बने। इसके लिए हम सबका सामूहिक प्रयास अपेक्षित है। हमें अपनी मूल विरासत जैन दर्शन और जैन विद्या के महत्व को उजागर करते हुए लोगों में इसके प्रति आकर्षण पैदा करना होगा। यहाँ से अधिकाधिक जैन विद्वान तैयार होकर विश्व स्तर पर जैन दर्शन का परचम फहराएँ।

सुरेन्द्र चोरड़िया

वर्ष 1
अंक 4
अक्टूबर-दिसम्बर
2011

संपादकीय

जीवन निर्माण के मुख्य घटक हैं - संस्कार, विचार और आचार। संस्कार व्यक्ति के व्यक्तित्व की आंतरिक ऋजुता की उत्पत्ति है, विचार संस्कारों की अभिव्यक्ति है और आचार इन दोनों की समन्वित निष्पत्ति है। अपेक्षा इस बात की है कि संस्कार, विचार और आचार की इस त्रिपदी में समरूपता हो और तीनों के परस्पर योग से सर्वांगीण दृष्टि से परिपूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण हो।

जैन विश्व भारती विगत चार दशकों से सद्संस्कार, शुद्ध विचार और सम्यक आचार के निर्माण की दिशा में कार्य कर रही है। जीवन निर्माण के इन तीन आधारभूत घटकों की दीक्षा, शिक्षा और प्रशिक्षा के लिए पिछले वर्ष कई नए आयाम स्थापित किए गए, गहन शोध और अनुसंधान किए गए तथा सेवामूलक विशिष्ट कार्यों को गति प्रदान की गई। इसके साथ ही साहित्य सृजन के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्य किए गए।

जैन विश्व भारती की स्थापना का मूल उद्देश्य साधना, शिक्षा, संस्कार निर्माण, साहित्य आदि सत्य सकारों का प्रसार एवं प्रवर्धन था। इन सत्य सकारों में साधना का विशेष स्थान रहा है। जैन विश्व भारती साधना को जीवन का अभिन्न अंग मानते हुए इस दिशा में जन सामान्य को अनवरत प्रोत्साहित कर रही है और पिछली अवधि में अनेक प्रकल्पों का संचालन भी किया है। इसी प्रकार संस्कृति के उन्नयन हेतु उसने कई कार्यक्रम संचालित किए हैं। जीवन के विभिन्न रंगों – उत्साह, उमंग, प्रगति, खुशी आदि को जन-जन में, विशेषकर तेरापंथ समाज में प्रसारित करने हेतु जैन विश्व भारती ने अनेक अभिनव उपक्रमों का संयोजन-संचालन किया और हर वर्ग के व्यक्तियों के जीवन में उन रंगों की परिव्याप्ति से होने वाले आह्लाद का साक्षीभूत बनी।

नई उम्मीदों और नए सपनों से भरा नया वर्ष पुनः नए रंग में उपस्थित हुआ है, जिसकी क्रोड़ में अनेक सुनहली शस्य-शिखाएं अंकुरित होने की अभिलाषा से प्रस्फुटित हो रही हैं। जैन विश्व भारती उन शस्य-शिखाओं को पल्लवित-पुष्पित होने का सुअवसर प्रदान करने के सत्संकल्पों से कार्यरत है। बीते वर्ष में किए गए कार्यों के पुष्पों को सींच-संवार कर उन्हें विशाल वृक्ष का आकार देने हेतु वह निरंतर प्रयासरत है। उसकी कामना है कि वर्ष 2012 में अपने उन लक्ष्यों को प्राप्त करे जो पूज्यवरों का पाथेय पाकर उसने निर्धारित किया है और उन ऊँचाइयों पर अपने समाज को पहुँचाए, जो पूर्व और वर्तमान आचार्यों की अभीप्सा रही है। सत्य सकारों की सिद्धि के पुनीत पथ में जैन विश्व भारती इन संकल्पों की समिधा अर्पित करती है :

नव वर्ष की शुभ सन्धि में, शुभ संकल्पों के सुमन खिलें
अभय, शांति की सुरभित हित, शुभ विनय के द्वार खुलें
भवार्णव से उबर इस जग में, शांति समता के पुष्प खिलें
धर्मोद्भव से प्रमित पथ की, ऋषि-धर्म का गुरु-ज्ञान मिले
आत्मबोध के निर्मल जल में, शुचिता-शुभता के पद्म खिलें
तन मन हो लय के अधीन, जग नंदनवन बन नीडत पले।

डॉ. वन्दना कुण्डलिया

वर्ष 1
अंक 4
अक्टूबर-दिसम्बर
2011

वर्धमान ग्रंथागार

कहा गया है कि साहित्य समाज का दर्पण होता है, क्योंकि उत्कृष्ट एवं यथार्थपरक साहित्य सामाजिक स्थितियों का प्रतिबिंब प्रस्तुत करता है। जिस समाज में साहित्य की महत्ता स्वीकारते हुए साहित्य-सृजन और संरक्षण के प्रति जागृति होती है उस समाज का उन्नयन एवं विकास सुनिश्चित होता है, क्योंकि सत्साहित्य व्यक्ति के चरित्र का उन्नयन कर एक सभ्य समाज का निर्माण करता है और मानव मूल्यों की स्थापना कर व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और देश के सर्वांगीण विकास का पथ प्रशस्त करता है। इस पृष्ठभूमि में जैन विश्व भारती में स्थित **'वर्धमान ग्रंथागार'** का स्थान अन्यतम है। यह पुस्तकालय धार्मिक, आध्यात्मिक और विशेषकर जैन दर्शन से संबंधित विपुल साहित्य-संभार से समृद्ध है और जैन तथा जैनेतर सभी वर्गों के पाठकों के लिए अत्यंत उपयोगी है।

भगवान महावीर की पच्चीसवीं निर्वाण शताब्दी के उपलक्ष्य में श्री मोतीलाल बैंगानी चैरिटेबल ट्रस्ट, लाडनूं के द्वारा 23 मार्च, 1973 को निर्मित इस 'वर्धमान ग्रंथागार' का उद्घाटन भारत के तत्कालीन उप राष्ट्रपति महामहिम श्री बासप्पा दानप्पा जत्ती (बी. डी. जत्ती) के करकमलों से हुआ। यह ग्रंथागार गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी की प्रेरणा एवं योजना तथा श्री हनुमानमलजी बैंगानी के सौजन्य एवं श्रीचंदजी रामपुरिया के अथक परिश्रम का परिणाम है। इस ग्रंथागार भवन का विस्तार 2001 में किया गया और नव निर्मित भवन का उद्घाटन विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की स्वायत्त संस्था 'इनफ्लिबनेट लाइब्रेरी नेटवर्क' के तत्कालीन निदेशक डॉ. टी. ए. वी. मूर्ति ने किया।

इस पुस्तकालय में 62,000 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं, जिनमें लगभग 12,000 पुस्तकें जैन दर्शन से संबंधित हैं। इसके अतिरिक्त समाजशास्त्र, दर्शनशास्त्र, विज्ञान, भूगोल, राजनीतिशास्त्र, धर्म, संस्कृति, भाषाशास्त्र आदि से संबंधित प्राचीन एवं अर्वाचीन पुस्तकें भी बड़ी संख्या में उपलब्ध हैं। विभिन्न विषयों के प्रामाणिक शब्दकोश की उपलब्धता इस ग्रंथागार की विशिष्टता है। बारह-कुड़ा और प्राचीन आगम साहित्य जैसे दुर्लभ पुस्तकों की उपलब्धता ने इस पुस्तकालय को देश के विशिष्टतम पुस्तकालयों में प्रतिष्ठित किया है। भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों के विद्यार्थी एवं अन्य अध्येता तथा शोधार्थी जैन धर्म पर शोध कार्य करने हेतु वर्धमान ग्रंथागार में आते हैं और इसके विपुल साहित्य संभार से लाभ उठाकर धन्यता का बोध करते हैं।

वर्धमान ग्रंथागार को आधुनिक वैज्ञानिक सुविधाओं से भी संपन्न किया गया है। यहाँ लगभग 6000 दुर्लभ पांडुलिपियाँ हैं, जिनके डिजिटलाइजेशन का कार्य राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन, नई दिल्ली के सहयोग से किया गया है। पुस्तकालयों के लिए विकसित किए गए अत्याधुनिक सॉफ्टवेयर के माध्यम से उन दुर्लभ पांडुलिपियों की सॉफ्ट कॉपी तैयार कर उन्हें कुल 321 सीडी में दर्ज कर लिया गया है। लाडनूं स्थित ग्रंथागार में 149 सीडी उपलब्ध हैं, इसके अतिरिक्त जोधपुर में 112 सीडी तथा सोरी में 5 सीडी हैं। इनमें कुल मिलाकर 23,332 पांडुलिपियों का डिजिटलाइजेशन किया गया है, जिसके 98,029 फोलियोज हैं। इस व्यवस्था ने इस पुस्तकालय की उपयोगिता और महत्ता दोनों को काफी बढ़ा दिया है।

वर्ष 1
अंक 4
अक्टूबर-दिसम्बर
2011

इस ग्रंथागार में लगभग 123 शोध पत्र-पत्रिकाएँ (107 राष्ट्रीय तथा 16 अंतरराष्ट्रीय) तथा 12,716 ऑनलाइन जर्नल यूजीसी इनफ्लोनेट के माध्यम से मंगाई जाती है, जो शोधार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी एवं आम पाठकों के लिए विशेष आकर्षण के केन्द्र हैं। इसके अतिरिक्त सात दैनिक समाचार पत्र भी ग्रंथागार में मंगाए जाते हैं, जिनमें हिंदी के चार तथा अंग्रेजी के तीन समाचार पत्र शामिल हैं।

पुस्तकालय की सभी पुस्तकों की प्रविष्टि सोल 2.0 सॉफ्टवेयर के डाटाबेस में कर दी गई है तथा पाठकों को बारकोड प्रणाली के माध्यम से पुस्तकों का आदान-प्रदान किया जाता है। इसके साथ ही पाठकों को पुस्तक खोजने में आसानी हो, इसके लिए ओपेक सॉफ्टवेयर की सुविधा उपलब्ध है, जिसके माध्यम से 62,000 पुस्तकों में से वांछित पुस्तक को सहज ही खोजा जा सकता है।

वर्धमान ग्रंथागार अपने पाठकों को ऑडियो विजुअल लाइब्रेरी की सुविधा भी उपलब्ध करवाता है, जिसके अंतर्गत होम थियेटर एवं 321 सीडी का संग्रह उपलब्ध है।

शोधार्थियों एवं अध्येताओं को संदर्भ ग्रंथों की सामग्री की छायाप्रति प्राप्त करने में सुविधा प्रदान करने के लिए पुस्तकालय में एक रिप्रोग्राफी मशीन लगाई गई है, जिसके माध्यम से बहुत न्यूनतम शुल्क लेकर पाठकों को आवश्यक सामग्री की छायाप्रति उपलब्ध कराई जाती है।

विश्व स्तर पर घट रही नवीनतम घटनाओं, जानकारियों से अवगत कराने हेतु सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग भी इस पुस्तकालय में किया जा रहा है। यहाँ इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध कराकर शोधकर्ताओं एवं आम पाठकों को आवश्यक सूचनाएँ संगृहीत करने में सहयोग किया जाता है। इंटरनेट के माध्यम से पाठक सभी प्रकार की वांछित सूचनाएँ सहज ही प्राप्त कर लेते हैं और अपने शोधकार्य एवं अन्य जरूरतों को बिना किसी परेशानी के पूरा करते हैं।

वर्धमान ग्रंथागार की एक बड़ी उपलब्धि *वर्तमान जागरूकता सेवा (करेंट एवेयरनेस सर्विसेस)* तथा *चयनित सूचना प्रसार सेवा (सेलेक्ट डिसेमिनेशन ऑफ इनफॉर्मेशन सर्विसेस)* की उपलब्धता कही जा सकती है, जिसके माध्यम से पाठकों को आवश्यक सूचनाएँ तत्काल उपलब्ध हो जाती हैं।

पुस्तकालय की महत्वपूर्ण पुस्तकों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए इस ग्रंथागार में 16 सीसीटीवी कैमरा लगाए गए हैं, जिनके माध्यम से ग्रंथागार की समस्त गतिविधियों पर कड़ी नजर रखी जाती है और पुस्तक एवं परिवेश के किसी भी प्रकार के दुरुपयोग या क्षति पर नियंत्रण रखा जाता है।

जैन विश्व भारती का महत्वपूर्ण आधार स्तंभ वर्धमान ग्रंथागार वर्तमान में पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. अमित शर्मा के कुशल निर्देशन एवं देखरेख में संचालित है और सभी श्रेणी के अध्येताओं, पाठकों, शोधार्थियों आदि को दुर्लभ और नौकरीउपयोगी अध्ययन सामग्री तथा हर विषय से संबंधित साहित्य उपलब्ध करा रहा है।

वर्ष 1
अंक 4
अक्टूबर-दिसम्बर
2011

अतीत के वातायन से

जैन विश्व भारती के कल्पनाकार श्री भंवरलालजी दुगड़ ने जैन विश्व भारती के निर्माण, संरचना, संचालन आदि के संबंध में जो भी योजना प्रस्तुत की थी उसकी जानकारी कामधेनु के पिछले अंकों में दी गई थी।

पिछले से आगे ......

भंवरलालजी दुगड़ के आकस्मिक निधन के बाद जैन विश्व भारती के निर्माण की योजना शिथिल पड़ गई। पुनः कुछ वर्षों के बाद इस योजना के निमित्त विभिन्न विचारों का जागरण हुआ। इस परिकल्पना के साथ आचार्य तुलसी ने दक्षिण भारत की यात्रा के अंतर्गत मद्रास चातुर्मास से पूर्व बेंगलूरु के निकट नन्दी हिल पधारे। नन्दी हिल में टाइम्स ऑफ इंडिया समूह की श्रीमती इंदु जैन ने आचार्य तुलसी के दर्शन किए। इस समय श्रीचंदजी रामपुरिया भी वहीं मौजूद थे। उन्होंने श्रीमती जैन को जैन विश्व भारती की परिकल्पना विस्तार से बताई। इंदु जैन ने इस परिकल्पना पर प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा - "यह कार्य आचार्य तुलसी जैसे महान व्यक्ति ही कर सकते हैं। हम भी इस कार्य में सहयोग करेंगे।" किंतु इस कार्य में कोई गति नहीं हुई। इस प्रसंग के अनंतर कुछ समय बाद जोधपुर निवासी श्री रतनलालमल भंडारी ने आचार्य तुलसी के दर्शन किए तब उन्हें भी जैन विश्व भारती के निर्माण की योजना बताई गई और उन्हें इस कार्य को आगे बढ़ाने के लिए कुछ दायित्व सौंपे गए। किंतु किन्हीं कारणों से इस क्षेत्र में कोई विशेष प्रगति नहीं हुई।

आचार्य तुलसी जैन विश्व भारती के परिप्रेक्ष्य में निरंतर चिंतन करते रहे। उनका यह चिंतन तेरापंथ धर्मसंघ की सर्वोच्च संस्था जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के अधिकारियों के पास भी पहुँचा। 29 जनवरी, 1968 को महासभा की विशेष बैठक में यह जानकारी दी गई कि महासभा के अंतर्गत जैन विश्व भारती विभाग (संस्थान) खोलने की योजना प्रस्तावित है। इस विषय पर कन्हैयालालजी दुगड़, हनुमानमल बैंगानी, खेमचंद सेठिया, केवलचंद नाहटा, श्रीचंद रामपुरिया आदि विशिष्ट श्रावकों के अनेक चिंतन सामने आए। यह भी विचार आया कि महासभा यदि अपनी अन्य प्रवृत्तियाँ चालू रखते हुए इसे हाथ में ले सके तो ले, वरना नहीं। गहन चिंतन-मंथन के बाद महासभा के सदस्यों ने यह तय किया कि मद्रास के आगामी अधिवेशन में जैन विश्व भारती की इस योजना के संबंध में विचार चिंतन कर निर्णय लिया जाएगा।

उधर आचार्य तुलसी निरंतर जैन विश्व भारती की कल्पना को आकार देने में प्रयत्नशील रहे। उन्होंने सूरजमलजी गोठी को जैन विश्व भारती की इस योजना से जुड़ने एवं काम को आगे बढ़ाने का निर्देश दिया। वे समर्पण भाव से इस कार्य के साथ जुड़ गए। इस जुड़ाव के साथ ही सूरजमलजी ने कई बार आचार्यश्री एवं कार्यकर्ताओं से संपर्क किया, यात्राएँ की तथा चिंतन गोष्ठियों का आयोजन किया। गुरुदेव तुलसी ने जिन व्यक्तियों को याद किया, गोठीजी ने उन्हें संवाद प्रेषित किया और आचार्यवर के दर्शन करवाए। आचार्य तुलसी ने जैन विश्व भारती का महत्व बताते हुए समाज के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के सम्मुख इस संदर्भ में ठोस निर्णय लेने का प्रस्ताव रखा।

1969 में आचार्य तुलसी का ऊटी प्रवास जैन विश्व भारती के निर्माण की दृष्टि से काफी कारगर एवं महत्वपूर्ण रहा। 23 अप्रैल, 1969 में ऊटी में एक पंचदिवसीय संगोष्ठी आयोजित की गयी, जिसका उद्देश्य धर्मशासन के विकास की नवीन दिशाएँ खोलने की दृष्टि से गंभीर चिंतन करना था। संगोष्ठी में श्रीचंद रामपुरिया, पारस भाई जैन, गोपीचंद चोपड़ा, खेमचंद सेठिया, प्रभुदयाल डाबड़ीवाल, जयचंदलाल कोठारी, हनुमानमल बैंगानी, बच्छराज सेठिया, नवरतनलाल सेठिया, प्रतापसिंह बैद, बच्छराज पारख, बालचंद आदि विशेष रूप से उपस्थित थे। संगोष्ठी के चिंतन का मुख्य बिंदु जैन विश्व भारती, अध्यात्म साधना केन्द्र, साधु-श्रावक के बीच की श्रेणी का निर्माण, अणुव्रत प्रचार-प्रसार, विदेशों में धर्म प्रचार आदि था। समाज के चिंतनशील व्यक्तियों ने आचार्य तुलसी की सन्निधि में बैठकर गंभीरता से चिंतन-मनन किया और यह तय किया कि समाज को एक ऐसे केन्द्र की आवश्यकता है, जहाँ से संघ की विशिष्ट गतिविधियों का संचालन किया जा सके। इस अपेक्षा की पूर्ति की दृष्टि से जैन विश्व भारती की स्थापना का निर्णय लिया गया।

*(मुनिश्री मोहनलालकुमार जी द्वारा लिखित **जैन विश्व भारती का इतिहास** से उद्धृत)*

आगे अंक में जारी......

वर्ष 1
अंक 4
अक्टूबर-दिसम्बर 2011

जैन विश्व भारती में तिमाही के दौरान विभिन्न गतिविधियाँ

14वां दीक्षांत समारोह

प्रतिभावान विद्यार्थी को सम्मानित करते हुए समण संस्कृति संकाय के विभागाध्यक्ष श्री रतनलाल चौपड़ा, निदेशक श्री पन्नालाल पुगलिया एवं पुरस्कार प्रायोजक श्री मालचंद बेंगानी

विभागाध्यक्ष श्री रतनलाल चौपड़ा को प्रतीकचिह्न भेंट करते हुए पुरस्कार प्रायोजक श्री मालचंद बेंगानी

दीक्षांत समारोह में उपाधि ग्रहण करने वाले संभागीगण एवं उपस्थित पदाधिकारीगण तथा विशिष्ट महानुभाव

जैन विश्व भारती के समण संस्कृति संकाय के द्वारा जैन विद्या का 14वां दीक्षांत समारोह आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में 1 अक्टूबर, 2011 को गरिमापूर्ण तरीके से केलवा में आयोजित किया गया। इस दीक्षांत समारोह में जैन विद्या का नौ वर्षीय पाठ्यक्रम पूर्ण करने वाले देश भर के 141 विद्यार्थियों को 'विज्ञ' की उपाधि दी गई। इसके साथ ही विगत वर्षों में अखिल भारतीय स्तर पर प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक प्रदान किए गए। समण संस्कृति संकाय के निदेशक श्री पन्नालाल पुगलिया ने संकाय की गतिविधियों का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। दीक्षांत समारोह में श्री मालचंद बेंगानी (बीकानेर-दिल्ली-काठमांडू) की अध्यक्षता में समण संस्कृति संकाय के विभागाध्यक्ष श्री रतनलाल चौपड़ा, निदेशक श्री पन्नालाल पुगलिया, जैन विश्व भारती के संयुक्त मंत्री श्री अरविंद गोठी एवं प्रायोजक श्री मालचंद बेंगानी द्वारा विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान किए गए। इस अवसर पर आचार्यप्रवर ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि "जैन विश्व भारती के द्वारा अनेक गतिविधियाँ संचालित की जाती हैं, जिनमें एक सक्षम एवं ठोस गतिविधि है – समण संस्कृति संकाय। इसके द्वारा वर्षों से जैन विद्या परीक्षाओं का आयोजन किया जाता है और अनेक विद्यार्थियों को इससे उपकृत, लाभान्वित होने का अवसर मिलता है। जैन विद्या के प्रति रुचि जागृत करने एवं विद्यार्थियों को इस दिशा में आगे बढ़ाने का सुंदर उपक्रम है।" समण संस्कृति संकाय प्रभारी मुनिश्री सुमेरमलजी 'सुदर्शन' एवं सह-प्रभारी मुनिश्री जयंत कुमारजी ने भी इस अवसर पर अपने विचार अभिव्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन श्री अशोक डूंगरवाल और श्रीमती सरिता सुराणा ने संयुक्त रूप से किया। इस अवसर पर समण संस्कृति संकाय द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक न्यूज बुलेटिन के प्रवेशांक की प्रति आचार्य श्री महाश्रमण के कर कमलों में समर्पित की गई।

राष्ट्रीय आंचलिक संयोजक कार्यशाला

जैन विश्व भारती के शिक्षा विभाग के समण संस्कृति संकाय द्वारा आचार्य श्री महाश्रमणजी के सान्निध्य एवं समण संस्कृति संकाय के प्रभारी मुनिश्री सुमेरमलजी 'सुदर्शन' एवं सह-प्रभारी मुनिश्री जयंतकुमारजी के निर्देशन में राष्ट्रीय आंचलिक संयोजक कार्यशाला का आयोजन दिनांक 1 अक्टूबर, 2011 को केलवा में किया गया। इस कार्यशाला में आंचलिक संयोजक, केन्द्र व्यवस्थापक एवं विज्ञ उपाधि धारकों के साथ संकाय के अधिकारियों द्वारा तीन सत्रों में जैन विद्या परीक्षाओं की कार्यप्रणाली, पाठ्यक्रम, विज्ञ उपाधि धारकों की सहभागिता आदि के साथ स्थानीय स्तर पर आने वाली समस्याओं पर चिंतन-मंथन किया गया। श्री दौलत बैंगलोर द्वारा, जयपुर के आर्थिक सौजन्य से आयोजित इस कार्यशाला में विभागाध्यक्ष श्री रतनलाल चौपड़ा, निदेशक श्री पन्नालाल पुगलिया, आंचलिक संयोजक श्री रमेश मुथा, श्री अशोक डूंगरवाल आदि ने जैन विद्या परीक्षा संबंधी विविध आयामों की चर्चा करते हुए भावी योजनाओं की प्रस्तुति भी दी। कार्यशाला में जैन विद्या परीक्षाओं की व्यवस्थाओं में सुधार एवं लोगों की जागरूकता में वृद्धि करने हेतु कुछ महत्वपूर्ण निर्णय भी लिए गए।

महादेवलाल सरावगी आगम मनीषा सम्मान समारोह

प्रो. नारायणलाल कच्छारा को सम्मानित करते हुए जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चोरड़िया

जैन विश्व भारती द्वारा आयोजित एवं एम.जी. सरावगी फाउंडेशन, कोलकाता द्वारा प्रायोजित वर्ष 2008 का **महादेवलाल सरावगी आगम मनीषा सम्मान** आचार्य श्री महाश्रमण के सान्निध्य में केलवा में दिनांक 8 अक्टूबर 2011 को प्रो. नारायणलाल कच्छारा को प्रदान किया गया। ज्ञातव्य है कि उदयपुर निवासी प्रो. कच्छारा ने प्राकृत साहित्य और जैनागमों के संवर्धन और संरक्षण में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है। प्रो. नारायणलाल कच्छारा को जैन विश्व भारती की ओर से अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चोरड़िया द्वारा पुरस्कार स्वरूप 51,000/- रु. की राशि का चेक एवं प्रतीक चिह्न तथा संयुक्त मंत्री श्री निर्मलसिंह चोरड़िया द्वारा अभिनन्दन पत्र प्रदान किया गया।

परिसर स्थित नेहरू बालोद्यान में बाल दिवस का आयोजन

बाल दिवस पर नेहरू बालोद्यान में आयोजित कार्यक्रम में अपने विचार अभिव्यक्त करती हुई आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की प्राचार्या समणी डॉ. मल्लीप्रज्ञाजी

बाल दिवस पर नेहरू बालोद्यान में आयोजित विविध वेशभूषा कार्यक्रम में सम्मलित होते बच्चे

जैन विश्व भारती परिसर में स्थित नेहरू बालोद्यान में दिनांक 14 नवंबर, 2011 को पंडित जवाहरलाल नेहरू की जन्म जयंती के उपलक्ष्य में 'बाल दिवस' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में नगरपालिका उपाध्यक्ष श्री याकूब शेख एवं जैन विश्व भारती के निदेशक श्री राजेन्द्र खटेड़ ने नेहरू प्रतिमा को पुष्पहार अर्पित कर श्रद्धासुमन अर्पित किया। इस अवसर पर आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की प्राचार्या समणी डॉ. मल्लीप्रज्ञा जी ने उद्बोधन दिया। बाल दिवस के आयोजन के अवसर पर विमल विद्या विहार के बच्चों के लिए विविध वेशभूषा प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें बच्चों ने आकर्षक एवं मनमोहक प्रस्तुति दी। इस अवसर पर विमल विद्या विहार के विद्यार्थी, आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की छात्राएँ तथा जैन विश्व भारती के कर्मचारी उपस्थित थे।

वर्ष 1
अंक 4
अक्टूबर-दिसम्बर 2011

वर्ष 1
अंक 4
अक्टूबर-दिसम्बर 2011
कामधेनु जैन विश्व भारती

जीवन विज्ञान दिवस का वृहद् आयोजन

जीवन विज्ञान दिवस के आयोजन पर संभाग अभिभाषण एवं उद्बोधन देते नागौर जिला पुलिस अधीक्षक श्री हरिप्रसाद शर्मा

जीवन विज्ञान दिवस पर आयोजित रैली प्रतियोगिता में संभागी विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थी

जीवन विज्ञान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित छात्र-छात्राएं

जीवन विज्ञान अकादमी, जैन विश्व भारती द्वारा सुधर्मा सभा में दिनांक 8 नवंबर, 2011 को प्रो. मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी के सान्निध्य में जीवन विज्ञान दिवस समारोहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर सामूहिक रैली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें लाडनूं शहर के 21 विद्यालयों के लगभग 1000 विद्यार्थियों ने भाग लिया। रैली का प्रारंभ स्थानीय न्यायाधीश श्री रामलाल चौधरी ने हरी झंडी दिखाकर किया, जो जीवन विज्ञान के उद्घोषों से वातावरण को गुंजायमान करते हुए लाडनूं के मुख्य मार्गों से होते हुए जैन विश्व भारती पहुँची। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में श्री हरिप्रसाद शर्मा, पुलिस अधीक्षक, जिला - नागौर ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि 'मानव जीवन का श्रेष्ठ समय विद्यार्थी जीवन होता है, जो व्यक्ति के सर्वांगीण विकास की बुनियाद निर्मित करता है।' प्रो. मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी ने जीवन विज्ञान की उपादेयता और प्रासंगिकता पर अपना पाथेय प्रदान किया। इस अवसर पर लाडनूं नगरपालिका के अध्यक्ष श्री बच्छराज नाहटा, जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. जे. पी. एन. मिश्रा, श्री ताराचंद रामपुरिया आदि गणमान्य लोग उपस्थित थे। जीवन विज्ञान दिवस पर आयोजित रैली प्रतियोगिता के प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विजेताओं को जैन विश्व भारती की ओर से पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम में समागत अतिथियों का जैन विश्व भारती की ओर से श्री हेमन्त नाहटा ने स्वागत किया। कार्यक्रम का संयोजन जीवन विज्ञान अकादमी के सहायक निदेशक श्री हनुमानमल शर्मा द्वारा किया गया। कार्यक्रम की सफल आयोजना में जैन विश्व भारती के निदेशक श्री राजेन्द्र खटेड़ सहित समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों का महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।

वर्ष 1
अंक 4
अक्टूबर-दिसम्बर 2011
जैन विश्व भारती कामधेनु

संघ सेवा पुरस्कार समारोह

श्री देवेन्द्र कुमार हिरण को पुरस्कार प्रदान करते हुए श्री जेसराज सेखानी, श्री लक्ष्मीपत सेखानी एवं श्री चैनरूप चिण्डालिया

नेमचंद जेसराज सेखानी चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा प्रायोजित एवं जैन विश्व भारती द्वारा आयोजित "श्रीमती पानादेवी सेखानी स्मृति संघ सेवा पुरस्कार" गंगापुर निवासी 'अणुव्रत सेवी' श्री देवेन्द्र कुमार हिरण को दिनांक 8 नवंबर, 2011 को केलवा में आचार्य श्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में प्रदान किया गया। यह पुरस्कार प्रति वर्ष ऐसे व्यक्ति को प्रदान किया जाता है, जिसने धर्मसंघ एवं समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया हो। इस अवसर पर जैन विश्व भारती के संयुक्त मंत्री श्री विजयसिंह चोरड़िया, महासभा के अध्यक्ष श्री चैनरूप चिण्डालिया एवं प्रायोजक परिवार की ओर से श्री लक्ष्मीपत सेखानी ने श्री देवेन्द्र कुमार हिरण को प्रतीक चिह्न, अभिनन्दन पत्र एवं 1,21,000/- रु. की राशि प्रदान की। जैन विश्व भारती के संयुक्त मंत्री श्री विजयसिंह चोरड़िया ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया एवं निदेशक श्री राजेन्द्र खटेड़ ने अभिनन्दन पत्र का वाचन किया। कार्यक्रम का संचालन श्री राजेश छाजेड़ ने किया।

आचार्य महाप्रज्ञ अहिंसा प्रशिक्षण सम्मान

श्री सौरभ आचार्य को सम्मानित करते हुए श्री कन्हैयालाल छाजेड़ एवं श्री विजयसिंह चोरड़िया

श्री संजय भाई को सम्मानित करते हुए श्री गुलाबचंद चिण्डालिया, श्री पोकरमल नाहर एवं श्री विजयसिंह चोरड़िया

एम.जी. सरावगी फाउंडेशन, कोलकाता द्वारा प्रायोजित एवं जैन विश्व भारती द्वारा आयोजित 'आचार्य महाप्रज्ञ अहिंसा प्रशिक्षण सम्मान 2011' पटना निवासी श्री सौरभ आचार्य तथा शेरपुर निवासी श्री संजय भाई को आचार्य श्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में दिनांक 8 नवंबर, 2011 को आयोजित एक विशेष कार्यक्रम में प्रदान किया गया। जैन विश्व भारती के संयुक्त मंत्री श्री विजयसिंह चोरड़िया, शासनसेवी श्री कन्हैयालाल छाजेड़, अणुव्रत शिक्षक संसद के अध्यक्ष श्री गुलाबचंद चिण्डालिया ने पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं को 1,51,000/- लाख रुपये का चेक, प्रतीक चिह्न तथा अभिनन्दन पत्र भेंट किया। जैन विश्व भारती के संयुक्त मंत्री श्री विजयसिंह चोरड़िया ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया तथा निदेशक श्री राजेन्द्र खटेड़ ने अभिनन्दन पत्र का वाचन किया। कार्यक्रम का संचालन श्री राजेश छाजेड़ ने किया।

वर्ष 1
अंक 4
अक्टूबर-दिसम्बर 2011

केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री श्री कपिल सिब्बल द्वारा आचार्य महाप्रज्ञ की नवीन कृति 'ट्रांसफॉर्म योर सेल्फ' का लोकार्पण

नवीन कृति का लोकार्पण करते हुए केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री श्री कपिल सिब्बल

समारोह में अपने विचार व्यक्त करते हुए जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चोरड़िया

समारोह को सम्बोधित करते हुए केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री श्री कपिल सिब्बल एवं उपस्थित प्रबुद्ध वर्ग

राजधानी दिल्ली के सिक्स्थ ऑडिटोरियम में 18 दिसंबर, 2011 को मुनिश्री जयकुमारजी के पावन सान्निध्य में आचार्य महाप्रज्ञ की नवीन कृति 'ट्रांसफॉर्म योर सेल्फ' का लोकार्पण भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्री श्री कपिल सिब्बल ने किया। हौंग कॉन्टिनेन्टल पब्लिशर्स इंडिया लिमिटेड एवं जैन विश्व भारती के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित लोकार्पण समारोह को संबोधित करते हुए श्री कपिल सिब्बल ने कहा कि "आचार्य महाप्रज्ञ एक महान आध्यात्मिक मार्गदर्शक थे, जिन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से जन-जन को आत्मावलोकन के लिए प्रेरित किया। आचार्य महाप्रज्ञ की यह कृति स्वयं से परिचित कराने की आध्यात्मिक कृति है।" जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय की कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञाजी ने आचार्य महाप्रज्ञ के साहित्यिक अवदान को स्पष्ट किया। मुनिश्री जयकुमारजी ने नवीन कृति के संदर्भ में विचार व्यक्त किए। हौंग कॉन्टिनेन्टल पब्लिशर्स के श्री कृष्ण चोपड़ा ने आचार्य महाप्रज्ञ के बहुआयामी व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला और आचार्य श्री महाश्रमण के साधनामय जीवन का उल्लेख किया। जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चोरड़िया ने आचार्य महाप्रज्ञ के साहित्यिक अवदानों पर संक्षेप में प्रकाश डालते हुए शिक्षा, साधना, साहित्य, संस्कृति, शोध, सेवा, समन्वय जैसे सप्त सकारों के क्षेत्र में जैन विश्व भारती द्वारा किए जा रहे महत्वपूर्ण कार्यों की भी चर्चा की और उपस्थित सभी आगंतुकों के प्रति आभार व्यक्त किया। इस पुस्तक लोकार्पण समारोह में समणीवृंद, गणमान्य नागरिकगण, दिल्ली का प्रबुद्ध श्रावक-समाज एवं बड़ी संख्या में मीडियाकर्मी उपस्थित थे। कार्यक्रम की सफल आयोजना में वरिष्ठ श्रावक श्री मोतीलाल सेठिया, जैन विश्व भारती के उपाध्यक्ष श्री कन्हैयालाल बोथरा, संयुक्त मंत्री श्री अरविंद गोठी, श्री स्वरूपचंद दाड़िया और श्री सुखराज सेठिया का विशेष योगदान रहा।

वर्ष 1
अंक 4
अक्टूबर-दिसम्बर 2011

दैनिक भास्कर के तत्वावधान में प्रेक्षाध्यान शिविर आयोजित

प्रेक्षाध्यान शिविर में संभागियों को प्रेक्षाध्यान का प्रशिक्षण देते हुए समण सिद्धप्रज्ञ

प्रेक्षा फाउण्डेशन, अणुविभा केन्द्र व दैनिक भास्कर के संयुक्त तत्वावधान में मालवीय नगर स्थित अणुविभा भवन में 15-16 अक्टूबर 2011 को दो दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर आयोजित किया गया। मुनि श्री कुलदीप कुमार जी ने तनाव मुक्ति के अचूक उपाय के रूप में प्रेक्षाध्यान की व्याख्या की। शिविर निर्देशक समण सिद्धप्रज्ञ ने ध्यान के विभिन्न प्रयोगों से होने वाले शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक लाभों की जानकारी दी व संभागियों को कायोत्सर्ग, दीर्घश्वास प्रेक्षा, लेश्याध्यान व अनुप्रेक्षा के प्रयोग करवाए। दैनिक भास्कर के संपादकीय सलाहकार श्री महेन्द्र सुराणा ने इस शिविर की आयोजना के लिए प्रेक्षा फाउण्डेशन व अणुविभा को बधाई देते हुए कहा कि दैनिक भास्कर स्वयंसेवी संस्थाओं के साथ मिलकर सामाजिक सरोकार के ऐसे कार्यक्रम करने को तत्पर है। प्रेक्षा फाउण्डेशन के श्री कैलाश डागा ने सभी से व्यक्तिगत संपर्क करते हुए संभागियों का हार्दिक स्वागत किया। शिविर संयोजक श्री गौरव जैन के अनुसार इस शिविर में लगभग 400 शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविर में पंजीकरण हेतु ऑन लाइन, मोबाइल द्वारा एवं भास्कर पत्र कार्यालय में भी व्यवस्था की गयी। इस अवसर पर शिविर संचालक श्री पन्नालाल पुगलिया ने जैन विश्व भारती, लाडनूं के आगामी आवासीय शिविरों एवं प्रेक्षाध्यान पत्रिका की जानकारी शिविर संभागियों को दी। इस वृहद शिविर की आयोजना में श्री निर्मल जैन, श्री हंसराज पुगलिया, तेरापंथ महिला मंडल व युवक परिषद का सक्रिय सहयोग रहा।

जैन विश्व भारती में प्रेक्षाध्यान शिविरों का आयोजन

प्रो. मुनि महेन्द्रकुमारजी के सान्निध्य में इस अवधि में दो प्रेक्षाध्यान शिविरों (13-20 नवंबर, 2011 तथा 11-18 दिसंबर, 2011) का आयोजन किया गया। शिविर के विभिन्न सत्रों में प्रो. मुनि महेन्द्रकुमारजी ने शिविर संभागियों को प्रेक्षाध्यान का सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया। इन शिविरों में समणीवृंद, प्रेक्षा प्रशिक्षक श्री एस. के. जैन, श्री लालचंद राज जैन एवं श्री जीतमल गुलगुलिया ने शिविरार्थी साधकों को प्रेक्षाध्यान, अनुप्रेक्षा, कायोत्सर्ग, योगासन, प्राणायाम आदि का अभ्यास एवं प्रयोग करवाया। इन शिविरों में देश के विभिन्न प्रांतों, जैसे हरियाणा, गुजरात, बंगाल आदि के साथ विदेशी नागरिकों में कनाडा की दो महिलाओं ने भाग लिया। शिविर सम्पन्नता पर प्रतिभागियों ने अपने अनुभवों का आदान-प्रदान करते हुए जीवन में प्रेक्षाध्यान की आवश्यकता को रेखांकित किया।

प्रेक्षावाहिनी का प्रथम अधिवेशन

प्रेक्षा फाउंडेशन के अंतर्गत संचालित प्रेक्षावाहिनी का प्रथम अधिवेशन केलवा में आचार्य श्री महाश्रमण के सान्निध्य में 1 एवं 2 अक्टूबर, 2011 को आयोजित किया गया। प्रेक्षावाहिनी के सदस्यों को पाथेय प्रदान करते हुए आचार्यश्री महाश्रमणजी ने कहा कि प्रेक्षावाहिनी के माध्यम से बिखरे हुए प्रेक्षा साधकों को एक माला में पिरोने का कार्य किया जा रहा है जो उचित है। शिविरों एवं कार्यशालाओं के माध्यम से साधकों में प्रेक्षाध्यान के सतत प्रयोग प्रेक्षावाहिनी के माध्यम से चलते रहने चाहिए। प्रेक्षा प्रभारी मुनिश्री कुमारश्रमणजी ने प्रेक्षावाहिनी के अतीत और वर्तमान की स्थिति तथा भविष्य की योजनाओं पर प्रकाश डाला। अधिवेशन के विभिन्न सत्रों में मुनिश्री किशनलालजी और मुनिश्री योगेशकुमारजी ने प्रेक्षा साधकों को प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षण प्रदान किया। दो दिवसीय कार्यक्रम की संक्षिप्त रिपोर्ट प्रेक्षावाहिनी के निदेशक एवं अधिवेशन के संयोजक श्री सुबोध पुगलिया ने प्रस्तुत की। आभार ज्ञापन जैन विश्व भारती के संयुक्तमंत्री श्री अरविंद गोठी ने किया।

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की छात्राओं ने लिया आई-लीड में सॉफ्ट स्किल का प्रशिक्षण

कोलकाता के आई-लीड संस्थान द्वारा आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की छात्राओं के लिए सॉफ्ट स्किल हेतु 15 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें महाविद्यालय की प्राध्यापिका श्रीमती निर्मला चत्रवार के नेतृत्व में तेरह छात्राओं ने भाग लिया। आई-लीड के संस्थापक एवं जैन विश्व भारती की संचालिका समिति के सदस्य श्री प्रदीप चोपड़ा ने सॉफ्ट स्किल का परिचय देते हुए आज के संदर्भ में इसकी आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डाला और छात्राओं को इसमें प्रतिभागी बनने हेतु प्रेरित किया। श्री चोपड़ा ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में विभिन्न सत्रों में छात्राओं को प्रेरणा, व्यवहार, सकारात्मक सोच, शरीर भाषा आदि के द्वारा व्यक्तित्व विकास का प्रशिक्षण दिया। प्रशिक्षण के दौरान छात्राओं को जी.डी. बिरला महाविद्यालय का भ्रमण करवाया गया और उन्हें उक्त महाविद्यालय के अंतर्गत संचालित विभिन्न पाठ्यक्रमों की जानकारी दी गई। जी.डी. बिरला कॉलेज में प्रशिक्षण के अंतर्गत कन्याओं को पाक क्रिया, कोरलिंग, पेंटिंग आदि का भी प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण के समापन सत्र में आई-लीड संस्थान में जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चोरड़िया ने प्रतिभागी छात्राओं को प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में व्यक्तित्व विकास संबंधी अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया, जिसमें कालू कन्या महाविद्यालय की छात्राओं ने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। सॉफ्ट स्किल के इस प्रशिक्षण कार्यक्रम की संपूर्ण संयोजना में श्री प्रदीप चोपड़ा की मुख्य भूमिका थी।

गुवाहाटी में 'समाज की कामधेनु : जैन विश्व भारती' विषयक कार्यक्रम एवं संचालिका समिति की बैठक का आयोजन

कार्यक्रम में विचार प्रस्तुत करते हुए जैन विश्व भारती के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री सुमेरमल सुराणा

जैन विश्व भारती की संचालिका समिति की बैठक में उपस्थित पदाधिकारीगण संचालिका समिति सदस्यगण एवं विशेष आमंत्रित महानुभाव

दिनांक 20 नवंबर 2011 को जैन विश्व भारती के तत्वावधान एवं श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, गुवाहाटी के आयोजकत्व में तेरापंथ भवन, गुवाहाटी में साध्वीश्री निर्वाणश्री जी के सान्निध्य में 'समाज की कामधेनु : जैन विश्व भारती' नामक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के अवसर पर जैन विश्व भारती के पदाधिकारीगण, संचालिका समिति के सदस्यगण, विभिन्न प्रवृत्तियों से जुड़े कार्यकर्तागण तथा गुवाहाटी के श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित थे। साध्वीश्री निर्वाणश्री जी ने जैन विश्व भारती को समाज की कामधेनु के रूप में व्याख्यायित किया। साध्वीश्री डॉ. योगक्षेमप्रभा जी ने कहा कि गुरुदेव तुलसी ने सही अर्थों में जैन विश्व भारती को कामधेनु कहा है। जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चोरड़िया ने संस्था की बहुआयामी प्रवृत्तियों की जानकारी पावर प्वाइंट के माध्यम से प्रदान की। वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री सुमेरमल सुराणा ने जैन विश्व भारती के आर्थिक पक्ष को प्रस्तुत करते हुए जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय की बहुआयामी कार्ययोजना प्रस्तुत की। उपाध्यक्ष श्री कांत पारख उपाध्यक्ष श्री कांत पारख, मंत्री श्री जितेन्द्र नाहटा, संयुक्त मंत्री श्री विनयसिंह चोरड़िया, तेरापंथ विकास परिषद के संयोजक श्री लालचंद सिंघी आदि ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। जैन विश्व भारती की ओर से तेरापंथी सभा, गुवाहाटी के पदाधिकारीगण तथा जैन विश्व भारती के विशेष सहयोगी श्री मनोज लूनिया, शिलॉन्ग को प्रतीक-चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया। जैन विश्व भारती से अधिकाधिक लोगों को जोड़ने और गतिविधियों से परिचित कराने की दृष्टि से यह यात्रा महत्वपूर्ण रही। इस आयोजन की सफलता में तेरापंथी सभा, गुवाहाटी एवं जैन विश्व भारती की संचालिका समिति के सदस्य श्री कन्हैयालाल डूंगरवाल एवं विजयसिंह डागा का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम का कुशल संयोजन तेरापंथी सभा, गुवाहाटी के मंत्री श्री निर्मल कोटेचा ने किया। इस अवसर पर जैन विश्व भारती की गतिविधियों के विकास हेतु संचालिका समिति के सदस्य श्री धनपत दूगड़, कोलकाता, श्री निर्मल छाजलिया, कोलकाता ने ग्यारह-ग्यारह लाख रुपये तथा श्री बसंत सुराणा, गुवाहाटी ने चार लाख रुपये के अनुदान की घोषणा की। इसके साथ ही उसी दिन मध्याह्न में जैन विश्व भारती की संचालिका समिति की बैठक भी आयोजित की गई।

उड़ान - 2011

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय द्वारा 13-14 अक्टूबर 2011 को राज्य स्तरीय अंतरमहाविद्यालय सांस्कृतिक एवं वाद-विवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें राज्य भर के लगभग 100 से अधिक विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में वाद-विवाद, एकल गायन, समूह गायन, एकल नृत्य, रंगोली रचना आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। सुधर्मा सभा में आयोजित समापन समारोह के मुख्य अतिथि राजस्थान मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री राजेश बालिया ने अपने अभिभाषण में कहा कि विद्यार्थी जीवन में प्रतिस्पर्धा नए चिंतन का विकास करती है। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि प्रसिद्ध उद्योगपति एवं जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्कालीन उपाध्यक्ष श्री प्यारेलाल पितलिया एवं प्रो. कुसुमलता भंडारी ने इस अवसर पर अपने सारगर्भित विचार व्यक्त किए। विश्वविद्यालय की कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञा के मार्गदर्शन में विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों और छात्राओं ने कार्यक्रम की संयोजना में अपना सहयोग प्रदान किया। इस विशिष्ट अवसर पर विश्वविद्यालय परिवार सहित तेरापंथ समाज के वरिष्ठ एवं प्रबुद्ध श्रावक श्री कन्हैयालाल छाजेड़, श्री ताराचंद रामपुरिया, श्री सुखराज सेठिया, श्री धर्मचंद लूंकड़ आदि उपस्थित थे। जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के कैरियर काउंसलिंग सेल एवं आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस कार्यक्रम में मातृ संस्था का व्यवस्थाओं में महत्वपूर्ण सहयोग रहा।

वर्ष 1
अंक 4
अक्टूबर-दिसम्बर 2011

विदेश स्थित केन्द्रों की विभिन्न गतिविधियाँ

ह्यूस्टन सेन्टर

इस त्रैमासिक अवधि में जैन विश्व भारती के ह्यूस्टन सेंटर में निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए गए :

प्रेक्षा सेन्टर का वार्षिकोत्सव

समणी अक्षयप्रज्ञा व समणी परिमलप्रज्ञा के सान्निध्य में ह्यूस्टन प्रेक्षा सेन्टर का वार्षिकोत्सव मनाया गया। नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से समणीवृंद ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया तथा बाद में ज्ञानशाला के अर्हम् समूह के द्वारा आगे के कार्यक्रमों का संयोजन किया गया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने 'Preksha Yoga for Healthy life' और 'JVB 360 TV Show' की आकर्षक प्रस्तुति दी। समणी अक्षयप्रज्ञा ने सहनशीलता के गुण की व्यावहारिक जीवन में उपयोगिता स्पष्ट करते हुए प्रत्येक व्यक्ति को इस गुण के विकास का संदेश दिया। सहनशीलता के विकास के लिए समणीवृंद ने योगासन, अनुप्रेक्षा, शाकाहार और धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन पर बल दिया।

प्रेक्षा सेंटर, ह्यूस्टन के वार्षिकोत्सव की झलकियाँ

ह्यूस्टन में दीपावली पर्व का आयोजन

समणी अक्षयप्रज्ञा व समणी परिमलप्रज्ञा के निर्देशन में नवरात्र और दीपावली पर्व पर नियमित जप, ध्यान व अन्य आध्यात्मिक गतिविधियों का आयोजन किया गया। 31 अक्टूबर, 2012 को ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों व उनके अभिभावकों हेतु बीयर क्रीक पार्क में एक पिकनिक कार्यक्रम रखा गया।

फिनिक्स में प्रेक्षाध्यान शिविर

3-5 नवंबर, 2011 के दौरान समणी अक्षयप्रज्ञा एवं समणी परिमलप्रज्ञा के द्वारा त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन फिनिक्स में किया गया। इस शिविर के विभिन्न सत्रों में समणीवृंद ने अनेक महत्वपूर्ण विषयों, यथा Who Am I, Why do good people suffer?, Power of Tolerance, Observe your Thought आदि पर व्याख्यान दिए तथा प्रेक्षाध्यान की विभिन्न तकनीकों का प्रशिक्षण दिया।

न्यूजर्सी सेंटर

इस अवधि में न्यूजर्सी सेंटर में समणी सन्मतिप्रज्ञा एवं समणी जयंतप्रज्ञा के सान्निध्य में अनेक धर्म प्रभावक कार्यक्रम आयोजित हुए। प्रथम बार दीपावली स्नेह मिलन का कार्यक्रम विक्रम मिल इन पार्क में समणीवृंद के सान्निध्य में आयोजित किया गया। ज्ञानशाला के बच्चों ने दीपावली के पर्व की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को आकर्षक तरीके से गीत एवं नृत्य के द्वारा प्रस्तुत किया। इस अवसर पर अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया, जो व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से बहुत उपयोगी थी।

इस वर्ष में तक न्यूजर्सी सेंटर के प्रबंधकों एवं सदस्यों की वार्षिक सभा का आयोजन किया गया, जिसमें वर्ष भर में हुए कार्यक्रमों के संबंध में चिंतन-मंथन किया गया और वर्ष 2012 में आयोजित की जाने वाली गतिविधियों की रूपरेखा तैयार की गई।

मियामी सेंटर

फ्लोरिडा इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी में समणी उज्ज्वलप्रज्ञा के द्वारा अध्यापन कार्य किया जा रहा है। साथ ही इस अवधि में प्रेक्षाध्यान के प्रथम चरण का कार्यक्रम मियामी समुदाय के लिए आयोजित किया गया। इसमें विभिन्न वर्गों के लगभग 25 लोगों ने भाग लिया, जिनमें डॉक्टर, व्यवसायी, शिक्षक, घरेलू महिलाएँ, विद्यार्थी आदि शामिल थे। शिविर के विभिन्न सत्रों में समणी चैतन्यप्रज्ञा, समणी उज्ज्वलप्रज्ञा एवं मुमुक्षु शीतल ने प्रेक्षाध्यान का सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया।

वर्ष 1
अंक 4
अक्टूबर-दिसम्बर 2011
कामधेनु जैन विश्व भारती

धर्म तीर्थ का प्रवर्तन

आचार्य महाप्रज्ञ

(जैन विश्व भारती की मूल परिकल्पना के अनुरूप पूज्य आचार्यों और साधु-साध्वियों ने जैन दर्शन से संबंधित विभिन्न शास्त्रों, सिद्धांतों, तथ्यों, जानकारियों आदि की खोज की और अपने शोधपरक लेखन द्वारा अनेक रहस्यों का उद्घाटन किया। आचार्य महाप्रज्ञ तेरापंथ धर्मसंघ के एक ऐसे प्रज्ञ पुरुष थे, जिनके गहन शोधपूर्ण अन्वेषणों से भारतीय साहित्य, विशेषकर जैन-साहित्य समृद्ध हुआ है। यहाँ प्रस्तुत है धर्म तीर्थ के प्रवर्तन से संबंधित उनका शोध-प्रधान आलेख।)

हिंदुस्तान में दो परंपराएँ बहुत पुरानी हैं – श्रमण परंपरा और वैदिक परंपरा। कौन कितनी पुरानी है, कौन पहले है और कौन बाद में – यह आज भी अनुसंधान का विषय बना हुआ है। जो बहुत पुरानी होती है, वह अच्छी होती है और जो नई होती है, वह अच्छी नहीं होती, यह अवधारणा ठीक नहीं है। एक नई परंपरा बहुत तेजस्वी और बहुत श्रेष्ठ हो सकती है और पुरानी परंपरा तेजस्वी और श्रेष्ठ नहीं भी हो सकती है। पुराना होना या नया होना श्रेष्ठता का मापदंड नहीं है। फिर भी ऐतिहासिक दृष्टि से यह जानना आवश्यक होता है कि पुराना कौन है और नया कौन?

भगवान ऋषभ : श्रमण परंपरा

श्रमण परंपरा बहुत प्राचीन है, इसमें कोई संदेह नहीं है। ऐतिहासिक काल और प्रागैतिहासिक काल अतीत को जानने के दो कोण हैं। पुरातत्व, भूखनन, सिक्के आदि के आधार पर इतिहास की प्रामाणिकता का निर्धारण किया जाता है। उससे जो भी अतीत है वह प्रागैतिहासिक काल है।

महावीर ऐतिहासिक पुरुष हैं, पार्श्वनाथ भी ऐतिहासिक पुरुष हैं। उनसे आगे इतिहास की वह सामग्री प्राप्त नहीं है, जिसके द्वारा उनकी ऐतिहासिकता की कसौटी की जा सके। जैन धर्म का शेष सारा अतीत प्रागैतिहासिक काल की सीमा में आता है। प्रश्न उठता है कि जैन धर्म का प्रवर्तन कब हुआ? क्या महावीर ने जैन धर्म का प्रवर्तन किया? तीर्थंकर आदिकर थे। कोई तीर्थंकर किसी के अनुयायी नहीं थे। महावीर पार्श्व के अनुयायी नहीं थे और न पार्श्व ऋषभ के अनुयायी थे। सब आदिकर थे। अब प्रश्न उठता है कि जब प्रत्येक तीर्थंकर आदिकर थे तो तीर्थंकरों की संख्या चौबीस कैसे हुई? यह अनुसंधान का विषय है।

जब सभी आदिकर हैं तो इस दृष्टि से महावीर भी जैन धर्म के प्रवर्तक कहे जाएँगे। किंतु जैन धर्म का सबसे पहले प्रवर्तन किसने किया, इस प्रश्न की खोज करते हुए हम उस युग में पहुँचते हैं, जिसमें युगलों का युग समाप्त होता है और सामाजिक व्यवस्था प्रारंभ होती है। समाज के उस आदिम युग में भगवान ऋषभ ने सबसे पहले जैन धर्म का प्रवर्तन किया। केवल जैन धर्म का ही नहीं, समग्र श्रमण धर्म का प्रवर्तन भगवान ऋषभ ने किया। जो परंपरा ऋषभ द्वारा स्थापित की गई, उसका नाम श्रमण परंपरा है। उस परंपरा में अनेक संप्रदाय बने, जैसे सांख्य संप्रदाय, बौद्ध संप्रदाय, आजीवक संप्रदाय आदि। उन संप्रदायों की संख्या चालीस या उससे अधिक है। जितने अवैदिक संप्रदाय थे वे सारे श्रमण संप्रदाय में थे। उन सभी का प्रवर्तन भगवान ऋषभ के द्वारा हुआ।

राजा ऋषभ एक दिन उद्यान में गए। वहाँ पुष्प क्रीड़ा हो रही थी। फूलों से खेला जा रहा था। फूलों का इतिहास बहुत पुराना है। आज के वैज्ञानिक इस तथ्य तक पहुँच गए हैं कि लगभग चौदह करोड़ वर्ष पूर्व तक यहाँ फूल खिलते थे। हो सकता है कि वैज्ञानिक एक दिन ऋषभ के युग तक पहुँच जाएँ। ऋषभ की पुष्पवाटिका अत्यंत मनोहर थी। वसंत का मौसम था। वृक्ष फलों से लदे हुए थे। लताओं पर फूल खिले हुए थे। विविध प्रकार की क्रीड़ाएँ हो रही थीं। ऋषभ का ध्यान उन पर केन्द्रित हुआ। उन्हें वह अद्भुत क्रीड़ा परिचित-सी लगी। उस पर ध्यान गहराया और वे अतीत में चले गए। सारा अतीत उनके सामने साक्षात प्रस्तुत हो गया। उन्होंने देखा कि यह दृश्य उनके द्वारा स्वर्ग में अमुक स्थान पर देखा गया है।

आत्म-मंथन

जब व्यक्ति अपने भीतर में देखना शुरू करता है और अपने जीवन की विविधताओं पर ध्यान केन्द्रित करता है तो वह बदल जाता है। यह रूपांतरण का बिंदु है। ऋषभ ने अपना अतीत देखा और उसे देखने के बाद वे विचार में चले गए। वहाँ गहरे उतरकर उन्होंने अनुभव किया कि आज जो फूल खिल रहा है, वह कल मुरझा जाएगा। आज यह बहुत सुंदर लग रहा है, इसका लाल रंग मन को हर रहा है। कल यही पुष्प कचरा बन जाएगा। यहाँ पर कचरे का ढेर लगा हुआ है। जो फूल टूटे पड़े हैं उनका कचरा बन गया है। ये फूल भी टूटकर इसका एक हिस्सा बन जाएँगे। यह कैसा जीवन? ऋषभ इस आत्मचिंतन में डूबते चले गए, आत्म-मंथन में लीन हो गए। पदार्थ की सारी स्थितियाँ उनके सामने प्रत्यक्ष हो गईं। पदार्थ क्या है? जगत क्या है? यह किससे बना है? यह किस प्रकार बनता है? यह फूल किस प्रकार विकसित होता है, खिलता है और किस प्रकार मुरझा जाता है?

पदार्थ : अपदार्थ

इस सारे चिंतन से ऋषभ के मन में एक भावना जागी कि मैंने समाज का निर्माण किया, उसकी व्यवस्थाएँ कीं, राज्य की स्थापना की, राजतंत्र का संचालन किया, सब कुछ किया पर अभी भी उसमें अधूरापन है। अगर पदार्थ विकास के साथ त्याग का विकास नहीं होगा तो सारा विकास अधूरा रह जाएगा। ऋषभ के मन में एक प्रश्न खड़ा हो गया, एक नई जिज्ञासा पैदा हो गई। उनके मन में एक नई अंतःप्रेरणा उत्पन्न हुई कि मुझे पदार्थ के विकास के साथ अपदार्थ का विकास करना है। पदार्थ और अपदार्थ दोनों का संतुलन नहीं होगा तो विषमताएँ उत्पन्न होंगी। ऋषभ ने एक नए मार्ग के प्रवर्तन का निश्चय किया। उन्होंने अपनी भावना भरत एवं जनता के सामने प्रस्तुत की। परंतु कोई नहीं चाहता था कि ऋषभ उन्हें छोड़कर जाएँ। सबने उनसे अनुरोध किया कि वे न जाएँ, परंतु ऋषभ दृढ़प्रतिज्ञ थे। वे भरत एवं बाहुबली आदि को अपना राज्य सौंपकर जंगल की ओर चल पड़े। वे विनीता ग्राम के बाहर उद्यान में पहुँचे। उनके साथ-साथ जनता की बहुत बड़ी भीड़ थी। सारी विनीता नगरी बेचैन थी। वे जानना चाहते थे कि ऋषभ कहाँ जा रहे हैं, क्यों जा रहे हैं? वे नहीं जानते थे कि साधु क्या होता है, साधु-जीवन क्या होता है? परंतु वे कच्छ एवं महाकच्छ के नेतृत्व में ऋषभ के साथ रहने के लिए उनके संग-संग चल पड़े।

नया प्रस्थान

भरत ने कच्छ एवं महाकच्छ से कहा कि वे ऋषभ के साथ न जाएँ, पर उन दोनों ने अपनी दृढ़ता प्रकट करते हुए कहा कि वे वहीं रहेंगे जहाँ ऋषभ रहेंगे। चार हजार लोग उनके पीछे-पीछे चल पड़े। यह एक नया प्रस्थान था। संभव है ऋषभ ने अपना वेश भी बदला होगा, पर यह कहना कठिन है कि उन्होंने अपना वेश क्या रखा था, कैसे कपड़े रखे, कितने कपड़े रखे? पहली बार क्या किया। आज इस बात का अंदाजा लगाना कठिन है।

आत्मा और समता

ऋषभ विनीता नगरी के उद्यान में खड़े हो गए। उनके साथ चार हजार लोगों की भीड़ भी खड़ी थी, इस संकल्प के साथ कि जहाँ ऋषभ रहेंगे वहीं वे भी रहेंगे। वे चार हजार व्यक्ति भी ऋषभ के साथ मुनि बन गए और समता धर्म का प्रवर्तन हो गया। समता धर्म के प्रवर्तन का अर्थ है - धर्म तीर्थ का प्रवर्तन। श्रमण परंपरा का मुख्य सूत्र है- समता। श्रमण परंपरा और वैदिक परंपरा में मुख्य विभाजक रेखा है समता। स्थानांग सूत्र में तीन प्रकार के व्यवसाय बताए गए हैं, उनमें एक है सामायिक व्यवसाय। इसका संबंध श्रमण परंपरा से है। समता का एक अर्थ समानता किया जाता है पर यह मूल अर्थ नहीं है। समता का अर्थ है आत्मा और आत्मा का अर्थ है समता। जो आत्मा है, वह सामायिक है और जो सामायिक है वह आत्मा है। आत्मा को स्वीकार किए बिना समता की स्थापना संभव नहीं है। यही एक ऐसा बिंदु है जहाँ बात की जा सकती है। जो व्यक्ति आत्मा की भूमिका में नहीं है उसे समता की बात करने का अधिकार ही नहीं है।

हमारे सामने दो बिंदु हैं – एक आत्मा और दूसरा पदार्थ। पदार्थ जगत में समता की बात करना कठिन है किंतु आत्मा की जगत में समता हो सकती है। ऋषभ ने पदार्थ जगत की सम्यक व्यवस्था के बाद आत्मा या समता का एक नया आयाम प्रस्तुत किया। लेकिन उन्होंने पुराने आयामों की उपेक्षा नहीं की, क्योंकि पदार्थ के बिना समाज का काम नहीं चल सकता। उन्होंने एक नए आयाम की स्थापना की। जगत दो भागों में विभक्त हो गया – पदार्थ जगत और आत्म जगत। दूसरे शब्दों में स्थूल जगत और सूक्ष्म जगत या मूर्त जगत और अमूर्त जगत। उन्होंने पक्ष के सामने प्रतिपक्ष का सिद्धांत प्रस्तुत किया और इन दोनों के बीच संतुलन स्थापित किया ताकि समस्याओं का समाधान हो सके। अनेकांत की सार्थक अभिव्यक्ति है – पदार्थ और आत्मा की स्वीकृति।

ऋषभ ने सबसे पहले आत्मा का आयाम खोला और कहा कि जहाँ आत्मा है वहीं समता स्वतः फलित होगी।

वर्ष 1
अंक 4
अक्टूबर-दिसम्बर 2011
कामधेनु जैन विश्व भारती

वर्ष 1
अंक 4
अक्टूबर-दिसम्बर
2011

ऋषभ की इस उद्घोषणा से मानव समाज को एक नया प्रकाश मिला। पदार्थ से अधिक मूल्य त्याग का हो गया। यहीं से धर्म तीर्थ का प्रवर्तन हुआ। जब धर्म तीर्थ का प्रवर्तन हुआ तो साधु और साध्वी, श्रावक और श्राविका समाज का निर्माण हुआ। भगवान ने जो नया बोध-पाठ दिया वहीं तीर्थ का प्रवर्तन हो गया। उनके प्रवचन से अनेक व्यक्ति प्रबुद्ध बने, साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका बने। ये तीर्थ के चार घटक हैं। तीर्थ के प्रवर्तन, समता धर्म के प्रवर्तन से समाज के सामने एक नया आदर्श और एक नई भूमिका प्रस्तुत हो गई।

ऋषभ और शिव

भगवान ऋषभ ने हिमालय पर तप किया। हिमालय उनकी तपोभूमि बन गई। आज वहां इतिहास की खोज की जा रही है। यह माना जाने लगा है कि ऋषभ और शिव दो व्यक्ति नहीं हैं, दोनों एक ही हैं। एक ही व्यक्ति की दो धाराएं बन गईं। एक धारा ने उनका नाम शिव दे दिया और दूसरी धारा में उनका नाम ऋषभ ही रहा। मूलतः दोनों एक ही हैं। धारवाड़ विश्वविद्यालय के पुरातत्व विभाग में ऋषभ की जटाधारी प्रतिमा मिलती है। ऋषभ और शिव दोनों की जटाधारी प्रतिमाएं मिलती हैं। ऋषभ की प्रतिमा धारवाड़ में और शिव की प्रतिमा इन्दौर के संग्रहालय में है। कहा जाता है कि ऋषभ ने दीक्षा ग्रहण करने के समय केश लुंचन किया। जब चार मुष्टि लुंचन संपन्न हो गया तब इन्द्र ने प्रार्थना की कि महाराज! यह केश-कलाप कितना सुंदर है, क्या आप इसे काट देंगे? आप इसे ऐसे ही रहने दीजिए। ऋषभ ने इन्द्र की प्रार्थना स्वीकार कर ली। उन्होंने एक मुष्टि केश का लुंचन नहीं किया। वह केश राशि बढ़ती गई और बढ़ते-बढ़ते नीचे तक पहुंच गई।

ऋषभ और शिव की प्रतिमा एक जैसी ही दिखती है। ऐसे भी अनेक तथ्य हैं जिनके आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि ऋषभ और शिव एक व्यक्ति के दो रूप हैं। शिव भी अर्धदिग्‌ हैं और ऋषभ भी अर्धदिग्‌ हैं। ऋषभ द्वारा प्रवर्तित समता धर्म जनता के लिए कल्याणकारी हुआ। भगवान महावीर ने भी उसी धर्म का प्रवर्तन किया। इतिहास के बाईस तीर्थंकर एक ओर दिखाई देते हैं और ऋषभ एवं महावीर दूसरी ओर दिखाई देते हैं। कभी पहला बिंदु और कभी अंतिम बिंदु। किन्तु दोनों समान रेखा पर अवस्थित नजर आते हैं। उन्होंने जिस समता नामक धर्म तीर्थ का प्रवर्तन किया वह आज भी हमारे लिए कल्याणकारी बना हुआ है।

जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

इस तिमाही के दौरान जैन विश्व भारती द्वारा निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित की गईं :

पुस्तक का नाम	लेखक	पुस्तक का नाम	लेखक
1. धम्मो मुद्धमणिहुई	आचार्य तुलसी	12. सुखी बनो	आचार्य महाश्रमण
2. धम्मो सत्तमुत्तमं	आचार्य तुलसी	13. दुःख मुक्ति का मार्ग	आचार्य महाश्रमण
3. धर्म सर्वं कल्याणानि	आचार्य तुलसी	14. क्या कहता है जैन वाङ्मय	आचार्य महाश्रमण
4. उद्बुद्ध हो व्यक्ति	आचार्य तुलसी	15. संवाद भगवान से, भाग-1	आचार्य महाश्रमण
5. लक्ष्य धर्म समावर्ते	आचार्य तुलसी	16. मैं का अनुबंध	मुनि दुलहराज
6. ढाई अक्षर धर्म का	आचार्य तुलसी	17. मन दमकी	मुनि दुलहराज
7. धर्म की जय हो जय	आचार्य तुलसी	18. मौन टूटे	मुनि दुलहराज
8. धर्म की लौ जलती रहे	आचार्य तुलसी	19. प्रेक्षाध्यान : व्यक्तित्व विकास	मुनि धर्मेशकुमारजी
9. हे धार्मिको विचारो	आचार्य तुलसी	20. दिल से सोचो	मुनि जयकुमारजी
10. इसिभासियाइं	आचार्य तुलसी/ आचार्य महाप्रज्ञ	21. सद्धर्म रेखा	मुनि जयकुमारजी
		22. अक्षर रोशनी का	साध्वी कुंदनरेखाजी
		23. महाजनक	साध्वी कंचनकुमारी
11. आओ हम जीना सीखें	आचार्य महाश्रमण	24. अष्टकम्	

कामधेनु का है वरदान आगम वाणी अनुसंधान

प्रो. मुनि महेन्द्रकुमार

जैन विश्व भारती के प्रमुख आयामों में एक है – शोध। जैन विश्व भारती की संस्थापना के पीछे एक दृष्टि थी शोध एवं अनुसंधान के माध्यम से प्राच्य विद्याओं के क्षेत्र में मौलिक कार्य किया जाए तथा उन विरल सत्यों को मानव समाज के समक्ष इस रूप में प्रस्तुत किया जाए कि मनुष्य का समग्र जीवन प्रकाशित एवं प्रभावित हो सके। इसमें मुख्य कार्य हो आगमों के अनुसंधान एवं पुनर्संपादन का। वैसे तो वर्ष 1954 से ही गुरुदेवश्री तुलसी और महाप्रज्ञ इस भगीरथ-कार्य में सक्रिय जुट गए थे, पर दक्षिण भारत की यात्रा के दौरान जब जैन विश्व भारती की संकल्पना आकार ले रही थी, तब से इस महत्वपूर्ण परियोजना को एक सुदृढ़ आधार मिल गया। प्राचीन ऐतिहासिक आगम-वाचनाओं की शृंखला में इस अभिनव आगम-वाचना के रूप में एक नया इतिहास जुड़ गया। देवर्द्धिगणी क्षमाश्रमण के लगभग 1500 वर्षों पश्चात तेरापंथ धर्मसंघ ने अपने ओजस्वी संकल्प के धनी अनुशास्ता आचार्य तुलसी के 'वाचनाप्रमुखत्व' में काल के भाल पर एक अमिट रेखा उकेर तथा अलौकिक प्रज्ञा के धनी आचार्य महाप्रज्ञ के 'संपादन-विवेचकत्व' में आधुनिक समीक्षात्मक शैली में समग्र आगम-वाणी के महासागर का मंथन प्रारंभ हुआ। प्रारंभ में लगभग 15 वर्षों तक जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा को और उसके पश्चात लगभग 41 वर्षों से धर्मसंघ की कामधेनु जैन विश्व भारती को इस महत्वपूर्ण शोध-प्रसूती को मनोरम ढंग से प्रकाशित करने तथा अर्हत्-वाणी को लिपिबद्ध तथा प्रसारित करने का श्रेय मिला। अब इस महान कार्य का सूत्रधार है युवामनीषी आचार्य महाश्रमण के वरद हाथों में। इस महायज्ञ में जहां एक ओर अनेक चारित्रात्माओं ने अपनी आहुति दी है, वहीं दूसरी ओर समाज समर्पित श्रावक-समाज ने भी मुद्रण-प्रकाशन का दायित्व कुशलतापूर्वक संभाल कर उन आहुतियों को सार्थक-सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

प्रस्तुत आलेख में यह बताने का प्रयत्न किया गया है कि यदि हम भगवान महावीर और जैन दर्शन को विश्व के समक्ष व्यापक रूप में प्रस्तुत करना चाहते हैं, जिससे अभी तक अल्पज्ञात जैन धर्म (जो विश्व धर्म बनने की अर्हता रखता है) का ज्ञान प्राप्त करने का अवसर विश्व में जन-जन को मिल सके, तो निश्चित रूप से हमें आगम वाङ्मय का गहन अनुसंधान कर उसे युगानुरूप शैली में सुलभ कराना होगा। इसके अभाव में संभवतः हम जैन धर्म को व्यापक रूप में प्रचारित-प्रसारित करने की दिशा में अधिक आगे नहीं बढ़ सकेंगे। वैदिक वाङ्मय एवं बौद्ध वाङ्मय के व्यापक प्रचार-प्रसार तथा सुलभता के कारण ही आज वे जैन धर्म की तुलना में कहीं अधिक व्यापक रूप में विश्व में ज्ञात हो चुके हैं, जबकि जैन वाङ्मय की अलभ्यता एवं अल्प प्रचार-प्रसार के कारण यह अल्पज्ञात रहा है। जैन विश्व भारती को विश्वविद्यालय का दर्जा (मान्य विश्वविद्यालय के रूप में) प्राप्त होने का मुख्य आधार भी आगम वाङ्मय के शोधपूर्ण प्रकाशन ही हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के तत्कालीन उपाध्यक्ष एवं भारतीय विद्याओं (इंडोलॉजी) के विख्यात विद्वान प्रो. सच्चिदानन्द मूर्ति ने प्रथम बार जब तुलसी-महाप्रज्ञ के दर्शन किए और आगम वाङ्मय के इन शोधपूर्ण प्रकाशनों को देखा तो वे आश्चर्यचकित रह गए। उन्होंने तभी यह उद्गार व्यक्त किया कि अन्य सभी उपलब्धियों को हम गौण कर दें, केवल इन शोधपूर्ण प्रकाशनों का ही मूल्यांकन करें तो भी जैन विश्व भारती को मान्य विश्वविद्यालय का दर्जा देने में कोई हिचकिचाहट नहीं होगी।

अब तक संपन्न शोधकार्यों का सिंहावलोकन

1. अंगसुत्ताणि भाग - 1 (प्रथम चार अंग आगम – आयारो, सूयगडो, ठाणं, समवाओ)
2. अंगसुत्ताणि भाग - 2 (भगवई, विआहपण्णत्ती)
3. अंगसुत्ताणि भाग - 3 (अंतिम सात अंग आगम – नायाधम्मकहाओ, उवासगदसाओ, अंतगडदसाओ, अणुत्तरोववाइयदसाओ, पण्हावागरणाइं, विवागसुयं)
4. नवसुत्ताणि – चार मूल, चार छेद तथा आवश्यक (आवस्सयं, दसवेआलियं, उत्तरज्झयणाणि, ववहारो, नंदी, अणुओगदाराइं दसाओ, कप्पो, निसीहज्झयणं)

वर्ष 1
अंक 4
अक्टूबर-दिसम्बर
2011

5. उवंगसुत्ताणि खंड - 1 (प्रथम तीन उपांग आगम – ओवाइयं, रायपसेणइयं, जीवाजीवाभिगमे)
6. उवंगसुत्ताणि खंड – 2 (अंतिम नव उपांग आगम – पण्णवणा, जंबुद्दीवपण्णत्ती, चंदपण्णत्ती, सूरपण्णत्ती, निरयावलियाओ, कप्पवडिंसियाओ, पुप्फियाओ, पुप्फचूलियाओ, वण्हिदसाओ)
7. भगवई भाग – 2 (शतक 3, 4, 5, 6 एवं 7)
8. भगवई भाग – 3 (शतक 8, 9, 10 एवं 11)
9. भगवई भाग – 4 (शतक 12, 13, 14, 15 एवं 16)
10. ठाणं
11. सूयगडो भाग – 1
12. निर्युक्तिपंचक (आचार्य भद्रबाहु विरचित दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, आचारांग, सूत्रकृतांग, दशाश्रुतस्कंध)
13. व्यवहार निर्युक्ति
14. पिण्डनिर्युक्ति
15. अनुयोगद्वाराई
16. गाथा (आगमों के आधार पर भगवान महावीर का जीवन एवं दर्शन रोचक शैली में)
17. नायाधम्मकहाओ
18. सानुवाद व्यवहार भाष्य
19. बृहत्कल्प भाष्य भाग – 2
20. श्रमण प्रतिक्रमण
21. Acharang Bhasyam
22. Bhagawati Part - I
23. आत्मा का दर्शन (बड़ा)
24. इसिभासियं
25. जीतकल्प सभाष्य
26. उवासगदसाओ
27. षडावश्यक

कोश साहित्य

1. श्री भिक्षु आगम विषय कोश भाग – 1 (अनुयोगद्वार, नंदी, उत्तराध्ययन, दशवैकालिक तथा आवश्यक) इन पांच आगमों तथा इनके व्याख्या ग्रंथों के आधार पर
2. श्री भिक्षु आगम विषय कोश भाग – 2 (पांच आगम – आचार चूला, निशीथ, दशा, कल्प और व्यवहार तथा इनके व्याख्या ग्रंथों के आधार पर)
3. आगम शब्दकोश शब्द सूची (अंगसुत्ताणि – तीनों ग्रंथों की समग्र शब्द सूची अकारादि क्रम से संदर्भ स्थल सहित)
4. जैन आगम : प्राणी कोश
5. जैन आगम : वाद्य कोश
6. एकार्थक कोश

आगमों का समीक्षात्मक अध्ययन

1. दशवैकालिक : एक समीक्षात्मक अध्ययन
2. उत्तराध्ययन : एक समीक्षात्मक अध्ययन
3. उत्तराध्ययन : एक समीक्षात्मक अध्ययन (अंग्रेजी अनुवाद : प्रकाश्य)

(शेषांश क्रमशः अगले अंक में ......)

श्री सुरेन्द्र चोरड़िया जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के कुलाधिपति मनोनीत

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के इंगितानुसार मातृ संस्था जैन विश्व भारती द्वारा तेरापंथ धर्मसंघ के वरिष्ठ श्रावक एवं जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चोरड़िया को दिनांक 27 दिसम्बर 2011 से आगामी चार वर्ष की अवधि के लिए जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय का कुलाधिपति मनोनीत किया गया। श्रीचंद रामपुरिया, श्री लक्ष्मीमल सिंघवी तथा श्री लालचंद सिंघी के बाद श्री सुरेन्द्र चोरड़िया चतुर्थ व्यक्ति हैं जो विश्वविद्यालय के कुलाधिपति के सर्वोच्च कार्यकारी पद पर प्रतिष्ठित हुए हैं। श्री चोरड़िया एक कर्मठ एवं पुरुषार्थी व्यक्ति हैं, जो लगभग एक दशक से भी अधिक समय से संघोन्नायक समर्पित भाव से संघीय सेवा का कार्य कर रहे हैं। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा को चार वर्षों तक उनका सशक्त एवं फलवान् नेतृत्व प्राप्त हुआ और उनकी अध्यक्षता में महासभा ने कई अविस्मरणीय ऊंचाइयों को छुआ किया, कई कीर्तिमान स्थापित किए। उन्होंने महासभा को सांगठनिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं आर्थिक दृष्टि से समृद्धि दिलाई। वे जैन विश्व भारती को अध्यक्ष के रूप में लगभग पांच वर्षों से अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। श्री सुरेन्द्र चोरड़िया ने अपनी नैसर्गिक प्रतिभा का परिचय धार्मिक, सामाजिक, व्यावसायिक और वैयक्तिक जीवन के सभी क्षेत्रों में दिया है। उनकी सोच, नेतृत्व शक्ति, प्रत्युत्पन्नमति कार्यशैली आदि ने उन्हें सर्वत्र समादृत किया है। उनकी निष्ठा, संघीय समर्पण तथा श्रेष्ठ श्रावकत्व जैसे गुणों का मूल्यांकन करते हुए आचार्य महाप्रज्ञ ने उन्हें **शासनसेवी** के गरिमामय संबोधन से संबोधित किया था।

श्री सुरेन्द्र चोरड़िया के कुलाधिपति के सम्मानजनक और गरिमामय पद पर मनोनीत किए जाने पर जैन विश्व भारती परिवार उन्हें हार्दिक बधाई देता है और उनके उपलब्धियों से भरे भावी यशस्वी जीवन की मंगलकामना करता है।

जैन विश्व भारती के नए सदस्य

1. श्रीमती सायरदेवी कोठारी, कोलकाता
2. श्री प्रकाश कुमार सेठिया, कोलकाता
3. श्री किशनलाल भंडारी, कोलकाता
4. श्री सुरेन्द्र कुमार कोठारी, मुंबई
5. श्री प्रदीप कुंडलिया, कोलकाता
6. श्री अशोक आच्छा, चेन्नई
7. श्री महावीरचंद गेलड़ा, चेन्नई
8. श्री राजेन्द्र खटेड़, लाडनूं
9. श्री बसंत सुराणा, गुवाहाटी

जैन विश्व भारती में इस समयावधि में जुड़े नए सदस्यों का हार्दिक स्वागत!

वर्ष 1
अंक 4
अक्टूबर-दिसम्बर
2011

चेतना को झंकृत करने वाली संस्था : जैन विश्व भारती

समणी चारित्रप्रज्ञा
कुलपति, जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय

समणी चारित्रप्रज्ञा

आज के व्यक्ति का एक सपना है - मुझे *श्रेष्ठता (एक्सिलेंस)* का जीवन जीना है, *संतुष्टि (फुलफिलमेंट)* और *सार्थकता (क्वालिफिकेशन)* के साथ जीना है। जीने का एक उद्देश्य है तो सार्थकता है, सफलता भी है। प्रश्न है श्रेष्ठता किसमें और कैसे? उसकी कार्यपद्धति क्या है? राह और सही है तो रास्ता सुगम हो जाता है। स्पष्ट चिंतन, सही प्रक्रिया और सम्यक पुरुषार्थ के योग से श्रेष्ठता को प्राप्त किया जा सकता है। मंजिल तक पहुँचने के लिए मंजिल का ज्ञान और उसकी प्राप्ति के लिए सघन प्रयास दोनों अत्यंत आवश्यक है। कोरा एक पक्ष साध्य को निकट नहीं ला सकता। उड़ान भरने के लिए दोनों पंखों को शक्ति संपन्न बनाना होगा।

भगवान महावीर ने उत्तराध्ययन सूत्र में कहा है - कुछ लोग सही जानते हैं, किन्तु वैसा आचरण नहीं कर पाते। कुछ लोग ज्ञान संपन्न नहीं होते हैं परंतु सम्यक आचरण करते हैं और कुछ लोग ज्ञान संपन्न भी होते हैं एवं सम्यक आचरण भी करते हैं। और कुछ लोग न तो ज्ञान संपन्न होते हैं और न ही अपने आचरण को अच्छा बना पाते हैं। सम्यक ज्ञान और सम्यक आचरण दोनों का संगम श्रेष्ठता की प्राप्ति में अति महत्त्वपूर्ण है। कोरा ज्ञान अहंकार की भूमिका को बढ़ावा देता है, संवेगों को अनियंत्रित बनाता है, कार्यक्षमता को कमजोर कर देता है। वैसा व्यक्ति जीवन के हर मोड़ पर छोटी-छोटी परिस्थितियों से प्रभावित होता हुआ बोझिलता का जीवन जीता है। स्वयं अशांत रहता है, अपने परिपार्श्व को भी अशांत कर देता है। अज्ञानता से होने वाली क्रिया व्यक्ति को मंजिल से कोसों दूर कर देती है। सफलता की सही पहचान न होने पर वह मूढ़ता का जीवन जीता है। दुःखों से भरी जिंदगी उनके लिए भारभूत बन जाती है, जीना जीना नहीं रह जाता।

जैन विश्व भारती गणाधिपति परम पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी एवं परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञ की तपोभूमि है। इस अध्यात्म भूमि के कण-कण में उनकी परिकल्पना है, उनके सपने हैं, उनकी सुवास है, उनकी सृजनशीलता की छाप है और उनकी सोच का प्रतिफलन तथा जीवन की अमूल्य धरोहर है। व्यक्ति के व्यक्तित्व की निर्माण-स्थली है जैन विश्व भारती। लगभग 27 वर्ष पूर्व इस स्थान से एक आत्मीय संबंध जुड़ा, अध्यात्म के पथ पर चलने का प्रयास प्रारंभ हुआ। ज्ञान एवं आचार की शिक्षा से दीक्षित होने का वह अनुपम अवसर मेरे जीवन का स्वर्णिम काल था। वे संस्कार मेरे चित्त में सदैव जागृत रहते हैं, चेतना को झंकृत करते रहते हैं।

दुनिया के प्रथम जैन विश्वविद्यालय 'जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय' का सूत्र वाक्य है - **णाणस्स सारमायारो।** यहां ज्ञान के साथ-साथ आचरण पक्ष पर अधिक बल दिया जाता है। नैतिकता, व्यावहारिकता आदि जीवन की मौलिक संपत्ति है। जीवन मूल्यों पर आधारित शिक्षा जीवन की विकट परिस्थितियों में जीने की उमीद देती है, आत्मविश्वास को जगाती है, सही पथ पर चलने की प्रेरणा देती है और जीवन में सफलताएँ सुनिश्चित होती हैं। जिस शिक्षा में नैतिक मूल्यों का अभाव है वह शिक्षा स्वस्थ समाज का निर्माण नहीं कर सकती। कुछ दिनों पूर्व अखिल भारतीय विश्वविद्यालयों का एक राष्ट्रीय सेमिनार कोचीन में आयोजित किया गया था, जिसमें विभिन्न विश्वविद्यालयों के लगभग 150 उप कुलपति उपस्थित हुए। चर्चा-परिचर्चा के दौरान बार-बार यही कहा जा रहा था कि उच्चतर शिक्षा में शिक्षा का उद्देश्य टेक्नोक्रेट पैदा करना नहीं, अपितु अच्छा इंसान बनाना है, जो समाज, राष्ट्र और मानवता का कल्याण कर सके। आज ऐसी शिक्षा का अभाव होता जा रहा है। सरकार के समक्ष सभी ने नैतिक शिक्षा को महत्त्व देने की मांग रखी। इस संदर्भ में जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय हमारे लिए एक आदर्श है जहाँ जीवन विज्ञान और प्रेक्षाध्यान के प्रयोगों के माध्यम से इंसान को इंसान बनाने की शिक्षा दी जाती है। जैन दर्शन के उच्चतम संस्कार और शांति का संदेश इस विश्वविद्यालय का प्रकाशस्तंभ है। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय नारी शक्ति को सुसंस्कृत एवं जीवनोपयोगी शिक्षा देने वाला महत्त्वपूर्ण शिक्षण संस्थान है।

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय जैन विश्व भारती का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। जैन विश्वविद्यालय के अनुशास्ता परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण एवं मातृ संस्था के सक्रिय सहयोग तथा मार्गदर्शन से विश्वविद्यालय निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर है। विश्वविद्यालय परिवार जैन विश्व भारती के माननीय ट्रस्टी, अध्यक्ष एवं समस्त पदाधिकारियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता है, उनके संरक्षण, संपोषण से जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय पूज्यवरों के सपनों को साकार करता रहे, यही शुभाशंसा है। मंगलकामना।

वर्ष 1
अंक 4
अक्टूबर-दिसम्बर
2011

प्रज्ञा जागरण का संस्थान : जैन विश्व भारती

ताराचंद रामपुरिया
पूर्व मंत्री, जैन विश्व भारती

मैं पहली बार लाडनूं जा रहा था। कोलकाता से जयपुर तक हवाई यात्रा, जयपुर से लाडनूं तक गाड़ी द्वारा करीब चार घंटे का सफर। जब लाडनूं की गड्ढों से भरी संकड़ी गलियों से गाड़ी निकल रही थी तो मन में आया 'कहाँ फंस गया' और इस विचार के साथ मेरे गंतव्य स्थल जैन विश्व भारती का जो स्वरूप मेरे मानस पटल पर उभरा वह बहुत ही निराशाजनक था। पर गाड़ी अब जैन विश्व भारती परिसर में प्रवेश कर चुकी थी। परिसर का स्वच्छ परिवेश, मनमोहक प्राकृतिक सौंदर्य और शांत वातावरण ने मेरे मन के क्षणिक अवसाद को तत्काल आंतरिक आह्लाद में बदल दिया। "I could not realise when my exhaustion transformed into enthusiasm, then into astonishment and finally into infinite happiness. I stood spell bound by the surrounding beauty." (मैं समझ नहीं सका कि कब मेरी थकान दूर हो गई और मन उत्साह से भर गया। मैं जैन विश्व भारती में चतुर्दिक फैले अप्रतिम सुंदरता और उसकी रमणीयता से अवाक एवं भावविभोर हो उठा और मेरा हृदय असीम प्रसन्नता से खिल उठा।) यह अनुभव जादवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता के अवकाशप्राप्त प्रोफेसर डॉ. अरुण मुखर्जी ने कुछ दिनों पहले मुझे सुनाया था। ऐसा अनुभव केवल मुखर्जी बाबू का ही नहीं, इस परिसर में आने वाले हर व्यक्ति को ऐसी ही कुछ सुखद अनुभूति होती है। बहुतों से सुना है कि यहाँ आने के बाद वापस जाने का मन नहीं करता है।

प्राथमिक विद्यालय से महाविद्यालय और विश्वविद्यालय तक का सफर – सब कुछ एक ही परिसर में – ऐसा सुयोग केवल जैन विश्व भारती में ही उपलब्ध है। विद्वज्जनों के लिए यहाँ पचासों दुर्लभ पुस्तकों और पांडुलिपियों से सुसज्जित पुस्तकालय है। कलाप्रेमियों के लिए तुलसी कला वीथी आकर्षण का केन्द्र है। तुलसी अध्यात्म नीडम् में प्रेक्षाध्यान एवं जीवन विज्ञान के प्रयोग करवाए जाते हैं।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, जय तुलसी फाउंडेशन, अखिल भारतीय युवक परिषद, अखिल भारतीय महिला मंडल, जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय, अमृत वाणी, आरोग्यम्, पारमार्थिक शिक्षण संस्था, गौतम ज्ञानशाला आदि तेरापंथ धर्मसंघ की विभिन्न संस्थाओं के कार्यालय इसी परिसर में स्थित हैं और यहीं से अपनी गतिविधियाँ सुचारु रूप से चला रहे हैं।

यहीं आयुर्वेदिक चिकित्सालय है और रसायनशाला में आयुर्वेद की औषधियाँ भी बनाई जाती हैं। विद्युत चुंबक चिकित्सा से भी यहाँ उपचार किया जाता है।

जैन विश्व भारती तपोभूमि के साथ-साथ कर्मभूमि भी है। यहाँ कण-कण में ऊर्जा का अक्षय स्रोत प्रवाहित है।

तेरापंथ धर्मसंघ के नवम अनुशास्ता गणाधिपति गुरुदेव तुलसी की अलौकिक कल्पनाशीलता एवं उनके अदम्य पुरुषार्थ का अनुपम कीर्तिपुंज है - जैन विश्व भारती। अपनी अलग पहचान के लिए विशिष्ट संस्थान - इस युगनायक का स्वप्न था। जैन विश्व भारती ने यह पहचान बनाई है केवल भारत में ही नहीं, विदेशों में भी। गणाधिपति गुरुदेव तुलसी की जन्मशताब्दी समारोह का प्रथम चरण जैन विश्व भारती में मनाया जाएगा, यह निर्णीत है। इस शुभ अवसर पर आइए, हम सब मिलकर ऐसा कुछ करें जो जैन विश्व भारती की इस पहचान को और उत्कृष्टता दे सके, महनीय बना सके।

कामधेनु जैन विश्व भारती

वर्ष 1
अंक 4
अक्टूबर-दिसम्बर 2011

कामधेनु जैन विश्व भारती

जैन विश्व भारती का प्रयोजन और प्रासंगिकता

डॉ. रामजी सिंह
पूर्व कुलपति
जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय

यह सचमुच एक आश्चर्य है कि जैन धर्म के चौबीस तीर्थंकर एवं अनेक विद्वान और संतों के होते हुए भी विशेषकर भारत में और विश्व के दूसरे भूभाग में लगभग डेढ़ करोड़ से अधिक जैन धर्मावलम्बियों के बावजूद जैन विश्व भारती संस्था के रूप में एक विश्वविद्यालय की स्थापना के पूर्व जैन धर्म से संबंधित कोई विश्वविद्यालय प्राचीन भारत में नहीं था। जैन विश्व भारती संस्था की स्थापना के पीछे शायद भविष्य में उसे विश्वविद्यालय का रूप देने की कल्पना रही हो, लेकिन यह तो एक विविध प्रयोजन वाली मातृ स्वयंसेवी संस्था थी। यह आचार्य तुलसी की ही कल्पना थी कि एक विश्वविद्यालय का निर्माण हो और जैन समाज में सरस्वती की साधना के लिए विशेष आग्रह और रुचि उत्पन्न हो। वस्तुतः जैन धर्म एक अत्यंत विशिष्ट दार्शनिक परंपरा है और वह अन्य वेदों से आकार-प्रकार में कम महत्वपूर्ण नहीं है। यही नहीं, उसका व्याकरण, दर्शन, धर्म, ज्योतिष, छंदशास्त्र, महाकाव्य आदि इतना समृद्ध है कि यदि एक सौ विश्वविद्यालयों में जैन धर्म के साहित्य का अवगाहन किया जाए तब भी जैन धर्म और दर्शन और संस्कृति का कार्य पूरा करने में कम से कम सौ वर्ष लगेंगे। श्रमण संस्कृति की दृष्टि से बौद्धों ने भारत के अंदर और बाहर अनेक विश्वविद्यालयों की स्थापना की, लेकिन जैन समाज ने न तो धर्म प्रचार के लिए कोई तंत्र बनाया और न इस कार्य में उसकी कोई विशेष रुचि ही थी। इतिहास साक्षी है कि इस्लाम, ईसाइयत आदि कई धर्मों की तरह जैन धर्म ने धर्म परिवर्तन या धर्म प्रचार के लिए कोई संगठन तंत्र नहीं बनाया था। इसीलिए संभवतः उसे दूसरे धर्मावलम्बियों से कम से कम विद्वेष सहना पड़ा। प्राचीन भारत में जब बौद्ध धर्म का प्रचार हुआ तो नालंदा, विक्रमशिला, उदंत, तक्षशिला आदि विश्वविद्यालय बने, जहाँ बौद्धों के अनेक शिक्षा संस्थान हैं और अन्य अनेक बौद्ध संस्थान हैं। जैन समाज को विस्तार में नहीं विचारों की सूक्ष्मता और गहराई में विश्वास है इसीलिए पारसी धर्म की तरह इन्होंने अपना विस्तार स्वयं नियंत्रित किया।

मेरी समझ में जैन विश्व भारती अन्य विश्वविद्यालयों की तरह सामान्य धर्म और जीविकोपार्जन के पाठ्यक्रम बनाने के लिए नहीं बना। इसके लिए पाँच सौ विश्वविद्यालय हैं। लेकिन जैन वाङ्मय, जो सदियों से उपेक्षित है, उसे समझने और समझाने के लिए अधिकाधिक सारस्वत साधना के केन्द्र होने चाहिए, जहाँ अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य आदि व्रतों को सामाजिक एवं सांस्कृतिक रूप प्रदान करने की दिशा में अधिक पहल हो और उन्हें सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का अंग एवं आंदोलन बनाया जा सके। विदेशों में प्रो. डाल्टु और अन्य कई पाश्चात्य विद्वानों ने संरचनात्मक अहिंसा पर जोर देकर समस्त विश्व का ध्यान इस ओर आकर्षित किया। किसी को शस्त्र-अस्त्र से मारना या काटना ही हिंसा नहीं है, शोषण, भ्रष्टाचार आदि भी हिंसा के भिन्न-भिन्न स्वरूप हैं।

गांधी ने सामाजिक परिवर्तन के लिए अनेक आंदोलन चलाए, जैसे अवज्ञा, उपवास, अहिंसक सत्याग्रह, असहयोग, सम्मिलित अनशन, धरना, विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार, अंग्रेज सरकार के विद्यालयों एवं अंग्रेजी अदालतों का बहिष्कार आदि, जिससे अहिंसा शक्तिमान हुई। महात्मा गांधी पर जैन धर्म और दर्शन का सर्वाधिक प्रभाव पड़ा है। जैन धर्म के विद्वान पंडित जुगल किशोर मुख्तार ने तो यहाँ तक कहा है कि गांधी जी की माता पुतलीबाई स्वयं जैन थीं। उनके जीवन में जैनों के प्रधान आधार तत्वों का बेहद प्रभाव था, जो उनके सारे जीवन से स्पष्ट दिखता है। गांधी ने सत्य और अहिंसा के प्रयोगों से अहिंसा और सत्य को एक नवीन आयाम प्रदान किया। सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह और अस्तेय को गांधी ने केवल व्यक्तिगत साधना का ही नहीं, बल्कि सामाजिक साधना

वर्ष 1
अंक 4
अक्टूबर-दिसम्बर 2011

कामधेनु जैन विश्व भारती

का भी अंग बनाया और यही कारण है कि भारत जैसे देश को स्वतंत्रता मूलतः अहिंसा और सत्याग्रह से प्राप्त किया गया। उसी तरह उन्होंने अपरिग्रह की साधना को सामाजिक स्वरूप देकर आर्थिक समानता को एक सामाजिक स्वरूप दिया। ब्रह्मचर्य व्रत को भी उन्होंने नियंत्रित ब्रह्मचर्य की कल्पना देकर एक नई व्यावहारिक और आदर्शोन्मुख विधान दिया।

गांधी, डाल्टन या अन्य विद्वानों ने आधुनिक समय में अहिंसा को जो सामाजिक स्वरूप दिया है उसका व्यापक और गंभीर अध्ययन और शोध जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय का परम स्वधर्म है। जैन विश्वविद्यालय में जैन वाङ्मय के रूप में प्राकृत और जैन दर्शन तथा विद्या का अध्ययन होता है; प्रेक्षाध्यान के रूप में जीवन विज्ञान की विधा का अध्ययन और शोध अवश्य ही एक नया आयाम है। जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय से अभी अनेक अपेक्षाएं और आशाएं हैं। सत्य का शोधन उसका प्रमुख लक्ष्य है। प्रत्येक धर्म में धर्म, दर्शन, धार्मिक अनुष्ठान और कर्मकांड तो है, लेकिन प्रायः कर्मकांड और धार्मिक अनुष्ठान तथा रूढ़ियों और अंधविश्वास का रहता है। यही कारण है कि प्रायः सभी धर्मों में आग्रहपूर्वक रूढ़ियाँ विकसित हो जाती हैं और धार्मिक कलह का कारण बन जाती है। सभी धर्मों के साथ एक बड़ा दुर्भाग्य यह है कि सभी धर्मावलंबी अपने-अपने धर्म को सबसे प्राचीन और सबसे श्रेष्ठ मानते हैं। अनेकान्तवादी सोच इसका एक बड़ा समाधान है। सत्य का शोधन उन्मुक्त और मुक्त वातावरण में होना ज्ञान के विकास के लिए परमावश्यक है।

विश्वविद्यालयों का उद्देश्य पूर्णतः सारस्वत साधना और वैश्विक दृष्टिकोण का विकास करना होता है। इस दृष्टि से जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय सतत प्रयत्नशील है। यह हमेशा निष्पक्ष एवं निर्भीक साधना के केन्द्र के रूप में कार्यरत है। उसने ज्ञान की साधना को व्यक्तिगत मुक्ति से जोड़कर माना है। व्यक्तिगत मुक्ति की साधना से केवल अपनी मुक्ति प्राप्त होती है किंतु सारस्वत साधना से संपूर्ण समाज को मुक्ति मिल सकती है। सुकरात ने हलाहल पान कर समस्त जगत के कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। जैन धर्म व्यक्तिगत मुक्ति, व्यक्तिगत आचरण वाली नैष्ठिक धर्मपालन पर बल देते हुए भी सामाजिक और सामष्टिगत समस्याओं के प्रति विशेष रूप से सक्रिय है। जैन विश्व भारती जैन धर्म के सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त करने की दिशा में अहम भूमिका निभा रही है।

लघु कथा

तर्क का चक्र

आचार्य महाप्रज्ञ

जबलपुर के महान ख्याति प्राप्त वकील हरिसिंह एक बार कोर्ट में अपने पक्ष की ओर से तर्क देने के लिए खड़े हुए, किंतु वे अपने पक्ष की बात भूल गए और प्रतिपक्ष की ओर से बोलने लगे। उन्होंने प्रतिपक्ष की ओर से इतने अकाट्य तर्क दिए कि वहां उपस्थित सभी लोग कायल हो गए। प्रतिपक्ष वाले खुश खुश हो रहे थे। उनका वकील भी खुश हो रहा था कि प्रतिपक्ष का वकील उसके पक्ष में बहस कर रहा है। हरिसिंह का जूनियर उन्हें बीच में टोकने का साहस नहीं कर सका। इसी बीच हरिसिंह को प्यास लगी। वे पानी पीने के लिए रुके। उनके जूनियर ने उन्हें संकेत किया कि वे तो प्रतिपक्ष की ओर से सारे तर्क दे रहे हैं और हमारा केस कमजोर हो गया। हम हार जाएंगे। हरिसिंह ने कहा "कोई बात नहीं, चिंता मत करो। अब मैं पक्ष की ओर से बोलूंगा।" और उन्होंने पक्ष की ओर से बोलना शुरू किया और जज से कहा – "न्यायाधिपति, अभी तक मैंने जो तर्क प्रस्तुत किए हैं वे विरोधी की ओर से थे। वे क्या कहने वाले हैं, यह आपके सामने रखा; अब मैं अपने पक्ष की ओर से तर्क प्रस्तुत कर रहा हूं।" उसके बाद उन्होंने उसी सशक्त भाषा में अकाट्य तर्क के साथ उन सारे तर्कों के उत्तर दिए और अपने पक्ष की सत्यता प्रमाणित की। अंततः वे जीत गए। यह था तर्क का चक्र। व्यक्ति अपने तर्कों से सत्य को झूठ और झूठ को सत्य साबित कर देता है।

वर्ष 1
अंक 4
अक्टूबर-दिसम्बर
2011

दान के भेद

दान दस प्रकार का होता है -1. **अनुकंपा दान** – किसी व्यक्ति की दीनावस्था से द्रवित होकर उसके भरण-पोषण के लिए दिया जाने वाला दान; 2. **संग्रह दान** – कष्ट में सहायता देने के लिए दान देना; 3. **भय दान** – भय से दान देना; 4. **कारुण्य दान** – शोक के प्रसंग में दान देना; 5. **लज्जा दान** – लज्जा से दान देना; 6. **गर्व दान** – यशोगान सुनकर एवं बड़प्पन की भावना से दान देना; 7. **अधर्म दान** – ... 8. **धर्म दान** – ज्ञानी पात्र को अभय, संयमी को विशुद्ध भिक्षा, किसी को ज्ञान, सम्यक्त्व और चारित्र की प्राप्ति में सहयोग; 9. **करिष्यति दान** – लाभ के बदले की भावना से दान देना; 10. **कृत दान** – किए हुए उपकार को याद कर दान देना।

दान शब्द का अर्थ है – देना, छोड़ना, विसर्जन करना। दान को चार प्रकार के धर्मों में एक धर्म माना गया है। मनुष्य की प्रत्येक प्रवृत्ति के पीछे एक भाव रहता है। सामान्यतया मनुष्य प्रत्येक कार्य के पहले यह जानना चाहता है कि वह उस कार्य को क्यों करे, उसका क्या फल होगा? फलाकांक्षा का त्याग बहुत कठिन है।

राबिया एक सूफी साधिका थी। वह एक हाथ में मशाल और एक हाथ में पानी की बाल्टी लेकर भागी जा रही थी। लोगों ने पूछा – 'आज क्या मामला है, कहाँ भागी जा रही हो?'

राबिया ने कहा – 'स्वर्ग को जलाने और नरक को डुबोने जा रही हूँ।'

लोगों ने पूछा – 'किसलिए?'

राबिया ने कहा – 'तुम्हारे धर्म के बीच में ये दो महान बाधाएं हैं। नरक का भय और स्वर्ग का प्रलोभन। व्यक्ति इन दोनों से मुक्त नहीं होता। यदि वह इन दोनों से मुक्त नहीं होगा तो शुद्ध एवं सत्य धर्म का पालन नहीं कर सकता।'

दान के पीछे जो मानसिक भाव-दशा होती है, उसी को आधार मानकर ये भेद किए गए हैं। कामना से मुक्त होने के बाद जो प्रवृत्ति होती है, वह वास्तविक प्रवृत्ति है। उसमें कोई आकांक्षा या प्रत्याशा नहीं होती। दान के साथ व्यक्ति को यह फलाकांक्षा और प्रत्याशा से मुक्त होने का पाठ सीखना चाहिए। सहज कर्तव्य बुद्धि से कार्य करना एक बड़ी कला है। इस कला में जो निपुण होता है वह कभी दुःखी नहीं होता।

प्राप्ति का मोह बड़ा जटिल है। प्रलोभन देकर आदमी से कुछ भी कराया जा सकता है। धर्म के नाम पर या धर्म होगा यह मानकर व्यक्ति का मन द्रवित हो उठता है। लोभ एक प्रकार का नहीं होता। जैसे धन का लोभ होता है वैसे ही स्वर्ग का भी लोभ होता है। दान के सभी प्रकारों से अवबुद्ध होकर व्यक्ति अपने मन को भ्रमित न करे और यह भी न भूले कि जीवन का ध्येय है – सभी प्रकार की कामनाओं से मुक्त होना। अपने को केवल एक निमित्त समझना है। फलाकांक्षा और प्रत्याशा की भावना से मुक्त होने पर ही इसकी अनुभूति होती है।

(आचार्य महाप्रज्ञ की पुस्तक संबोधि से उद्धृत)

लघु कथा

हित चिंतन

आचार्य महाश्रमण

प्रशस्त सोच का एक बिंदु है – हित चिंतन। व्यक्ति ऐसा चिंतन करे, जिससे स्वयं का भी भला हो और दूसरों का भी भला हो। स्वयं का मंगल हो और दूसरों का भी मंगल हो। दूसरों के बारे में असत् चिंतन करने से सामने वाले का नुकसान होता है या नहीं, हम इस चर्चा में न भी जाएं, किंतु यह निश्चित है कि स्वयं का तो अहित होता ही है।

किसी गांव में एक बुढ़िया रहती थी। वह दूसरे घरों में काम करके जैसे-तैसे अपना पेट भरती थी। उसकी पड़ोसिन भी एक बुढ़िया थी, किंतु दोनों में बनती नहीं थी। दोनों ही एक दूसरे का अहित करने पर तुली हुई थीं, पर क्या करें, कैसे करें, इस चिंता में घुली रहती थीं। दोनों के मध्य यह तनाव बहुत समय तक चलता रहा। एक दिन बुढ़िया देवी के मंदिर में गई और भावपूर्ण आराधना की। देवी प्रसन्न हुई और वरदान मांगने को कहा। साथ ही एक शर्त लगा दी कि जो तुम्हें मिलेगा तुम्हारी पड़ोसिन को उससे दुगुना मिलेगा, इसलिए सोच-समझकर मांगना। देवी की शर्त बड़ी विचित्र थी। वह असमंजस में पड़ गई। मैं जो भी मांगूंगी, वह मेरी पड़ोसिन को दुगुना मिलेगा, यह कैसे सहन हो सकता है? कुछ क्षण तक वह सोचती रही। अचानक उसके मन में आया – आज अच्छा मौका है उसको परास्त करने का। ऐसा मांग मांगूंगी कि वह जिंदगी भर याद रखेगी। उसने देवी से वर की याचना करते हुए कहा – मेरी एक आंख फोड़ दो। देवी तथास्तु कहकर अंतर्धान हो गई। मांगने वाली की एक आंख फूटी, दूसरी की दोनों आंखें चली गईं।

यह है असत् चिंतन का एक उदाहरण। भारतीय संस्कृति का महत्त्वपूर्ण संदेश है –

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्।।

सभी प्राणी सुखी हों, सभी निरामय हों, सभी कल्याण के मार्ग पर चलें, कोई दुःखी न बने।

वर्ष 1
अंक 4
अक्टूबर-दिसम्बर
2011

जैन विद्या मनीषी श्रीचंदजी रामपुरिया : पुरुषार्थ के जीवंत प्रतीक

सुजानगढ़ के प्रतिष्ठित रामपुरिया परिवार के संस्थान श्री पूनमचंदजी रामपुरिया के सुपुत्र श्री श्रीचंदजी रामपुरिया तेरापंथ श्रावक-समाज के ऐसे रत्न थे, जिन्होंने जैन साहित्य के विशाल सृजन के द्वारा जैन समाज को अविस्मरणीय योगदान दिया है। उनका ऊर्जस्वल एवं कर्मठ व्यक्तित्व बहुआयामी था। उन्होंने स्वयं को पारिवारिक सीमाओं में आबद्ध न रखकर समाज के उत्थान और विकास में अपने आपको समर्पित कर दिया और समाज की प्राणधारा में अपनी प्राणधारा मिलाकर वे आजीवन संघ एवं समाज की सेवा करते रहे। अपनी प्रातिभ प्रतिभा का परिचय देते हुए उन्होंने साहित्य संपादन, संकलन, आलोचना, लेखन एवं प्रकाशन के द्वारा जैन साहित्य को एक नई गति, अनुपम शैली एवं बहुरूपता प्रदान की। जैन, बौद्ध, वैदिक एवं गांधी वाङ्मय के गहन अध्ययन की पृष्ठभूमि पर उनके द्वारा लिखी गई तुलनात्मक एवं समीक्षात्मक कृतियों से तेरापंथ धर्मसंघ का दार्शनिक आधार तो सुदृढ़ हुआ ही, साथ ही धार्मिक साहित्य-संसार भी समृद्ध हुआ। अपनी कृतियों के माध्यम से श्रीचंद रामपुरिया ने जैन धर्म की अनुपम सेवा की है। उनकी विशिष्ट आगमी सेवाओं के लिए जैन विश्व भारती ने उनको "जैन रत्नम्" का अभिधान देकर उन्हें महिमा-मंडित किया। जैन तत्त्व विद्या एवं जैन दर्शन के गंभीर अध्येता के रूप में भी उन्होंने अपना उल्लेखनीय स्थान बनाया और जैन आगम ग्रंथों का संपादन एवं प्रकाशन कर एक बहुत बड़े अभाव की पूर्ति की। इन सभी कार्यों में उनकी मौलिक प्रतिभा, सूझ-बूझ तथा कुशल संपादन क्षमता का पता चलता है।

इतिहास, साहित्य एवं सिद्धांत आदि सभी क्षेत्रों में उनकी लेखनी अनवरत चलती रही। आचारांग के सूक्त, जीव की नवबाड़ एवं नव पदार्थ जैसे जटिल सैद्धांतिक तथ्यों का भी सरल एवं सुबोध भाषा में प्रतिपादन कर उन्होंने उसे सामान्य जनता के लिए सहज-सरल बना दिया। उन्होंने अपनी साहित्य-सेवाओं से तेरापंथ श्रावक-समाज को गौरवान्वित किया।

महासभा के द्वारा प्रकाशित 'जैन भारती' साप्ताहिक का प्रारंभ उनके कुशल संपादन में हुआ और दो दशकों तक उनकी उत्कृष्ट पत्रकारिता का लाभ पाठक वर्ग को प्राप्त हुआ। अपनी जागृत सांप्रदायिकता, सुरुचिपूर्ण समालोचना तथा पैनी दृष्टि से लिखी गई सामयिक टिप्पणियों से उन्होंने न केवल जैन समाज वरन जैनेतर जिज्ञासु पाठकों को भी उद्वेलित किया है। समय-समय पर उनके वैचारिक और प्रभावपूर्ण आलेखों ने ऐसी चेतना जगाई है कि वे आज भी जागृत समाज के लिए इतिहास की रजत रेखाएँ और मील के पत्थर बने हुए हैं। समाज जागृति के लिए एक जागरूक प्रहरी के रूप में उनकी सेवाएँ कभी विस्मृत नहीं की जा सकतीं।

जीवन के उत्तरार्ध में उनके प्रतिभा संपन्न एवं दूरदर्शी व्यक्तित्व का सुयोग आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ के संरक्षण में स्थापित जैन विश्व भारती को प्राप्त हुआ और उससे जैन विद्या और जैन संस्कृति के विकास तथा विस्तार को एक सुदृढ़ आधार मिला। कुलपति, अध्यक्ष एवं मंत्री के रूप में जैन विश्व भारती ने उनके अनुभवशील नेतृत्व एवं संगठन शक्ति का संबल प्राप्त किया। जैन विश्व भारती का वर्धमान ग्रंथागार उनके पुरुषार्थ का जीवंत प्रमाण है। जैन विश्व भारती की परिकल्पना से लेकर उसकी समस्त कार्यविधियों में अपरिहार्य रूप से जीवन पर्यन्त उनकी संलग्नता को रेखांकित करते हुए आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि "रामपुरिया जी जैन विश्व भारती के पर्याय बन चुके हैं।"

रामपुरिया जी के जीवन की सर्वोच्च उपलब्धि थी आचार्य तुलसी का अटूट विश्वास, असीम कृपादृष्टि, अपनत्व एवं वात्सल्यता की भावना। उनकी उल्लेखनीय सेवाओं से प्रभावित होकर आचार्यवर ने उनको अनेक संबोधनों से संबोधित किया। गुरु एवं समाज द्वारा प्रदत्त अनेक अलंकरण एवं उपाधियाँ उनका वरण कर कृतार्थ हो गईं। रामपुरिया जी की विशिष्टताओं का अंकन करते हुए आचार्य तुलसी ने कहा था, "श्रीचंद रामपुरिया जी पुरुषार्थ के जीवंत प्रतीक हैं। वे वय, अनुभव और आर्थिक दृष्टि से जितने समृद्ध हैं, ज्ञान, दर्शन और चारित्र के क्षेत्र में भी उतने ही उन्नत हैं। उनका तत्त्वज्ञान गंभीर है तो व्यावहारिक ज्ञान भी ठोस है। उनकी मनोवृत्ति अनुसंधानात्मक है। वे नवीनता और प्राचीनता में सामंजस्य स्थापित करने की कला में निष्णात हैं। जैन रत्नम्, जैन विद्या मनीषी, समाज भूषण आदि उपाधियों से अलंकृत होकर भी वे सदा निरुपाधि रहने में सदा विश्वास करते हैं।"

ऐसे विलक्षण विशेषताओं के धनी व्यक्तित्व को जैन विश्व भारती परिवार का शत-शत नमन।

वर्ष 1
अंक 4
अक्टूबर-दिसम्बर 2011

समाज मुद्दे या लॉबी को नहीं, ईमानदारी को जीए

धर्मचन्द चौपड़ा
पूर्व अध्यक्ष, जैन विश्व भारती

जो कार्य पहले प्रारंभ कर देते हैं और योजना पीछे बनाते हैं, वे परत-दर-परत समस्याओं व कठिनाइयों से घिरे रहते हैं। उनकी मेहनत सार्थक नहीं होती। उनके संसाधन नाकाफी रहते हैं।

कमजोर शरीर में जैसे बीमारियाँ घुस जाती हैं, वैसे ही कमजोर नियोजन और कमजोर व्यवस्था से कई-कई असाध्य रोग लग जाते हैं।

पदाधिकारी, प्रमुख एवं प्रभारी अपने नाम, पद एवं शोभा को ही ओढ़ लेते हैं। जबकि दायित्व और चुनौतियाँ उनसे कई गुना ज्यादा होती हैं।

इस प्रकार के दृश्य आज ऊपर से नीचे तक नजर आते हैं, जहाँ नियोजन में कल्पनाशीलता एवं रचनात्मकता का नितांत अभाव रहता है और लक्ष्य सोपान पर ही लड़खड़ा जाता है। नियमितता तो हमने सीखी ही नहीं और सीखेंगे भी नहीं। आजकल एक प्रवृत्ति और चल पड़ी है, मुद्दों की। कौन-सा मुद्दा जनहित का है, उन्हें कोई मतलब नहीं। कौन-सा व्यक्ति का है, उससे मतलब है। और दूसरी हवा जो चल पड़ी है, लॉबी बनाने की, गुट बनाने की। इसमें न संविधान आड़े आता है, न सिद्धांत, क्योंकि 'सम विचार' इतना खुला शब्द है कि उसके भीतर सब कुछ छिप जाता है। छोटी से छोटी संस्था व व्यवस्था में लॉबी का रोग लग गया है। जो शक्ति संस्था एवं समाज के हित में लगनी चाहिए, वह गलत दिशा में लग जाती है।

लोग सिद्धांत और व्यवस्था के आधारभूत मूल्यों को मटियामेट कर सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक स्तर पर कीमत वसूलने की कोशिश करते हैं। सत्य को ढका जाता है या नंगा किया जाता है पर स्वीकारा नहीं जाता। और जो सत्य के दीपक को पीछे रखते हैं वे मार्ग में अपनी ही छाया डालते हैं।

समाज को उन्नत करने का हथियार मुद्दे या लॉबी नहीं, पद पर शोभा नहीं, ईमानदारी है। और यह सब प्राप्त करने के लिए ईमानदारी के साथ सौदा नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि यह भी एक सच्चाई है कि राष्ट्र, सरकार, समाज, संस्था एवं संविधान ईमानदारी से चलते हैं, न कि झूठे दिखावे, आश्वासन एवं वायदों से।

दायित्व और उसकी ईमानदारी से निर्वाह करने की अनभिज्ञता संसार में जितनी क्रूर है, उतनी क्रूर मृत्यु भी नहीं होती। मनुष्य हर स्थिति में मनुष्य रहे। अच्छी स्थिति में मनुष्य मनुष्य रहे और बुरी स्थिति में वह मनुष्य नहीं रहे, यह मनुष्यता नहीं, परिस्थिति की गुलामी है।

हमारे कार्यभार पद की श्रेष्ठता और दायित्व की ईमानदारी को व्यक्तिगत अहम से ऊपर समझने की प्रवृत्ति को विकसित कर मर्यादित व्यवहार करना सीखें अन्यथा शतरंज की इस बिसात में यदि प्यादा वजीर को पीट ले तो आश्चर्य नहीं।

बहुत से लोग काफी समय तक दवा के स्थान पर बीमारी को ढोना पसंद करते हैं पर क्या वे जीते जी नष्ट नहीं हो जाते? खीर के ठंडा करके खाने की बात समझ में आती है पर बासी होने तक ठंडी करने का क्या अर्थ रह जाता है?

हमें लोगों के विश्वास का उत्पीड़क नहीं, अपितु संरक्षक बनना चाहिए।

वर्ष 1
अंक 4
अक्टूबर-दिसम्बर 2011

संस्थान के सर्वप्रिय कर्मी : विमल सिंह राठौड़ राजपूत

जैन विश्व भारती में कार्यरत विभिन्न कर्मचारी अपनी योग्यता, व्यवहार और कार्य के आधार पर अलग-अलग विशिष्ट स्थान रखते हैं। संस्था के ऐसे सर्वप्रिय कर्मचारी हैं – श्री विमलसिंह राठौड़ राजपूत, जो 'विमलजी' के नाम से परिचित हैं। सन् 1991 से जैन विश्व भारती से जुड़े विमलजी वर्तमान में वाहन चालक के पद पर कार्यरत हैं। वे अपनी नियुक्ति से लेकर आज तक के जैन विश्व भारती के विभिन्न विभागों - सचिवालय, तुलसी अध्यात्म नीडम्, सत्कार अतिथि गृह आदि में अपनी सेवाएं दे चुके हैं। श्री विमलजी अपनी सत्यवादिता, वाकपटुता और व्यवहार-कुशलता के कारण सभी के प्रिय कर्मी हैं। जैन विश्व भारती में नियुक्ति के बाद एक बार गुवाहाटी में नौकरी करने का भी अवसर मिला, किन्तु यहाँ की हवा-पानी से वे इतने जुड़ गए कि उस नौकरी को छोड़कर वे पुनः यहीं आ गए। ज्ञातव्य है कि वे लाडनूं शहर के राठौड़ राजपूत समाज के युवक मंडल के मंत्री भी हैं। वे जैन विश्व भारती में पूरी निष्ठा, लगन और सेवा भावना के साथ कार्य करते हैं और हर स्थिति में संस्था के हित के प्रति सजग रहते हैं। ऐसे समर्पित कर्मियों को पाकर संस्था गौरव की अनुभूति करती है और उनके उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना करती है।

संस्मरण

मेरी आश्रयस्थली : जैन विश्व भारती

शोभा सेठिया

मैं राजस्थान में लाडनूं की निवासी तथा औरंगाबाद की प्रवासी रही हूँ। मेरे पिता जी मदनलाल जी सेठिया औरंगाबाद में ही निवास करते थे और हम सभी परिवारजन उनके ही साथ रहते थे। 14 वर्ष की अल्पायु में ही मेरा विवाह हो गया। किन्तु नियति का खेल कुछ ऐसा था कि विवाह के डेढ़ वर्ष बाद ही मेरे पति का देहान्त हो गया और मेरा खुशहाल जीवन वीरान हो गया।

संयोग से कुछ समय बाद मुनिश्री सुखलालजी का औरंगाबाद आगमन हुआ। मुनिश्री के प्रवास के दौरान मुझे भी उनकी सेवा-उपासना का अवसर मिला। सेवा के दौरान मुनिश्री सुखलालजी ने मुझे जैन विश्व भारती आने की प्रेरणा दी। मुनिश्री की प्रेरणा से 1980 में मैं जैन विश्व भारती आई। यहाँ आने के बाद प्रारंभ के दस वर्षों में मैंने तुलसी अध्यात्म नीडम् में रसोई व्यवस्था की देखरेख का कार्य किया और बाद में साधु-साध्वियों की सेवा को ही अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया। तब से जैन विश्व भारती मेरी अपनी भूमि बन गई है और एक परिवार की तरह मुझे इसने आश्रय दिया है। मैं अपनी आश्रयस्थली जैन विश्व भारती के सभी सदस्यों के प्रति कृतज्ञ हूँ जिनका सहयोग सदैव मुझे मिलता रहा और साधु-साध्वियों की सेवा जैसा पुनीत कार्य मेरे जीवन को सार्थकता प्रदान कर रहा है।

बताओ तो जानें

1.
बिन बारिश के दिख जाए
ऐसा कभी हुआ ही नहीं
रंग है इसमें अनेक समाए
पर हमने कभी छूआ नहीं।

2.
न ही कभी यह आता है
न कभी यह जाता है
उसके भरोसे जो भी बैठा
वह हमेशा पछताता है।

3.
कुछ है उथली कुछ है गहरी
बहना ही है इसका जीवन
प्यास बुझाती प्यासों की,
कलकल छलछल लहरों के संग।

4.
फैली उजली यह कैसी चादर
सूरज दुबका बैठा ऊपर
सामने से आता दिखे न कोई
कांप रहे सब थरथर-थरथर।

[illegible]

नमन जैन
कक्षा -7, विमल विद्या विहार

अनमोल माँ

दुनिया में अनमोल वात्सल्य का घर है माँ
ममता की मूरत ईश्वर की सूरत है माँ
माँ के आशीषों से जीवन सफल हो जाता है
माँ के बिन घर सूना-सूना नजर आता है
माँ बच्चों की जीवनदाता है
माँ शिशु की भाग्य निर्माता है
माँ प्रथम गुरु ज्ञानदाता है
माँ संस्कारों की प्रदाता है
माँ की ममता भरी गोद जिसे मिल जाए
वह सदा सुखी, नेह निर्झर पा जाता है
माँ की ममता जिसे मिले
वह सबसे बड़ा धनवान है
माँ के बिना जीवन मरु समान है
जिस घर में माँ को सम्मान मिले
वहाँ सुख-शांति और भगवान मिले
जहाँ माँ को सम्मान नहीं
उस घर में भगवान नहीं।

वैशाली जैन
कक्षा - 8, महावीर इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर

AIMS OF EDUCATION

E - To eradicate ignorance and illiteracy.
D - To develop sense of discipline.
U - To utilise the power of understanding.
C - To cultivate the sense of curiosity and creativity.
A - To acquire quality of aspiration.
T - To learn quality of tolerance.
I - To inculcate interest of acquiring knowledge.
O - To be obedient to elders in life.
N - To be noble and humble in life.

Simran Potaliya
Class- VII A, Vimal Vidya Vihar

कामधेनु के तीसरे अंक में शिखरा पर अंकित शिलालेख शीर्षक के अंतर्गत समणी ऋजुप्रज्ञा द्वारा व्याख्यायित गुरुदेव तुलसी की अमर कृति 'तेरापंथ प्रबोध' की महनीय पंक्तियों - "कामधेनु है विश्व भारती, शिक्षण संस्था सरसायी" का विवेचन अति आकर्षक एवं समीचीन लगा। इस हेतु मेरी बधाइयाँ।

गौतमचंद सेठिया, चेन्नई

जैन विश्व भारती की गृह-पत्रिका 'कामधेनु' का तीसरा अंक मिला। आकर्षक कलेवर एवं हर पृष्ठ ज्ञानवर्धक रहा। गुरुदेव श्री तुलसी ने जैन विश्व भारती को कामधेनु कहा था। वह चरितार्थ इस पत्रिका से हो रहा है। तुलसी जन्म शताब्दी सामने है। महाप्रज्ञ के नए आयाम सामने आने चाहिए। समण संस्कृति संकाय, तुलसी कला वीथी आदि विशिष्ट कार्य विश्व भारती द्वारा संचालित अनेक बहुमूल्य आगम विश्वविद्यालय आदि की संपूर्ण जानकारी कामधेनु से बिंदु रूप में प्राप्त कर आह्लादित हुआ। पठनीय, ग्रहणीय और संग्रहणीय कामधेनु आपके परिश्रम से जन-जन तक पहुँचे और लोग लाभान्वित हों। सभी विश्व भारती को जानें। कामधेनु क्या है, गुरुदेव तुलसी के अद्भुत, अद्वितीय सपना क्या थे आदि अनेक रहस्य भरी जानकारी मिलती रहे। कामधेनु अपना नाम तथा गुण चरितार्थ करने को तत्पर लग रही है। इसमें आप सभी का श्रम बोल रहा है।

पुष्पाहार के नुस्खे व समणीवृंद का परिश्रम एवं नई-नई जानकारियों व वर्तमान जीवन की समस्या के समाधान के साथ-साथ प्रेक्षाध्यान (तुलसी अध्यात्म नीडम्) की विशेष जानकारी भी दी।

इंद्रचंद जैन 'कवि', चौथ

जैन विश्व भारती की गृह पत्रिका कामधेनु का जुलाई से सितंबर का तीसरा अंक प्राप्त हुआ। मुखपृष्ठ बहुत ही आकर्षक बनाया हुआ है। अंक भी काफी आकर्षक लगा। जैन विश्व भारती की पूरी जानकारी इस अंक द्वारा प्राप्त होती है। निश्चित ही आपका यह प्रयास समाज के लिए उपयोगी साबित होगा तथा अन्य समाज के लोगों को भी हमारी संस्था की जानकारी प्राप्त होती रहेगी। यह पत्रिका लोकप्रिय बने और इसकी उत्तरोत्तर प्रगति होती रहे इसी मनोकामना के साथ।

विनोदकुमार चोरड़िया, जयसिंगपुर

कामधेनु का जुलाई-सितंबर, 2011 टेमो-टेम मिल्यो। ई स्यूं घेणो भी मिल्यो। आभार।
कामधेनु अंक पढ़कर मोटोघेणा जी राजी होयो। आध्यात्मिक, अर सामाजिक घणी खुराक मिली। आपां रा आचार्य अर साधु-समाज आपो समाज रा कुलपतियों भीतरां री घणी बातां स्यूं जीवन मां बदलाव लिख्यो आवै जे कोई ध्यान लगाकर पढ़ कर मनन करै। आपां रै धर्म नै कैद स्यूं बाहर निकालणै रो श्रेय पूज्य महाराज आचार्य तुलसी जी महाराज नै है। देश-विदेश रा स्थापना-स्थापना मोनिशा जैन विश्व भारती रै आंगणै आ नै आप रै जीवन नै हल्को करयो। आपां री समाज मां अंजोरण है समय आणै स्यूं समझ मां आवैला।

डूंगरमल कोठारी, चूरू

वर्ष 1
अंक 4
अक्टूबर-दिसम्बर
2011

कामधेनु पत्रिका का नाम चयन करने वालों को साधुवाद। कामधेनु के तीन अंक प्राप्त हुए। दुबली-पतली पत्रिका में आपने काफी सामग्री का समावेश किया है। आकर्षक छपाई, सुंदर साज-सज्जा, चित्र, जैन विश्व भारती के परिसर में अवस्थित भवनों एवं उन भवनों में चलने वाले अनेक प्रकार के कार्यों की संक्षिप्त जानकारी से पाठक को अवगत कराने का आपका उद्देश्य सफल होता प्रतीत होता है। फिर भी जितनी जिज्ञासा लोगों को विश्व भारती के संबंध में रहती है शायद उससे पूर्ण समाधान प्राप्त नहीं होता है। संबंधित आवासों के साथ-साथ परिसर में स्थित गेस्ट हाउस, कॉटेज आदि में रहने की सुविधा एवं किराया के संबंध में जानकारी मिलने से अनेक स्थानों से आने वाले पर्यटकों के लिए यह आकर्षण का कारण बनेगा।

डॉ. हीरालाल छाजेड़ (जैन), कटक

जैन विश्व भारती की गृह पत्रिका कामधेनु का पहला तथा द्वितीय अंक प्राप्त हुआ। बहुत जानकारियाँ मिलीं, जो मिलनी बहुत जरूरी है। इसका जितना ज्यादा प्रचार-प्रसार होगा, उतना ही ज्यादा नाम अपने को मिलेगा।

श्यामलाल सेठिया, अहमदाबाद

Very often JVB have done far more work in far more fields than JVB has ever claimed credit for and also what JVB did to acknowledge the ideas, support etc. Generously received from eminent persons from society and others. Claim credit now and also acknowledging the ideas of late Shri Bhanwarlalji Dugar. Keep it up. Take the time and give space for any aconplishments that you now realise which JVB had overlooked or undervalued in the past. Many of us are too busy and to intellecually self defended to allow such small gateways for inspiration and motivation to give entrance. I am happy that you have realised this and taken it up in your house magzine.

N. M. Dugar, Jaipur

I have truely overwhlmed going through July-September 2011 issue of Kamdhenu. It is an outstanding and scholarly publication.
The article I enjoyed most and read twice is "Naye Jeewan Ka Nirman" by His Holiness Acharya Mahaprajnaji.
One of the thoughts that deeply touched me in the article is that "Even today too many of the diseases have their root in mind rather than in body."
Truely Jainism is the right path in today's tormented world.

Rajeev Chhajer, Ahmedabad